वार्षिकी

2015-2016

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)

अध्यक्ष : प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
उपाध्यक्ष : डॉ. चंद्रशेखर कंबार
सचिव : डॉ. के. श्रीनिवासराव

विषय-क्रम

साहित्य अकादेमी : संक्षिप्त परिचय 5
प्रमुख गतिविधियाँ 8
साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2015 9
साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2015 13
साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार 2015 17
साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2015 21

कार्यक्रम

साहित्योत्सव 2016 25
अकादेमी प्रदर्शनी का उद्घाटन 25
आदिवासी भाषा काव्योत्सव 27
साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2015 अर्पण समारोह 29
पुरस्कृत रचनाकारों का मीडिया से संवाद 30
युवा साहिती : नई फ़सल 34
संवत्सर व्याख्यान 35
राष्ट्रीय संगोष्ठी 37
गाँधी, अंबेडकर, नेहरू : निरंतरता और अलगाव 37
पूर्वोत्तरी : उत्तर-पूर्व और उत्तरी लेखक सम्मिलन 43
आमने-सामने कार्यक्रम 44
परिसंवाद : भारत की अलिखित भाषाएँ 45
संगोष्ठी : अनुवाद चेतना और भारत में भारतीय साहित्यिक परंपराएँ 47
आओ कहानी बुनें : बाल गतिविधियाँ 49
अनुवाद पुरस्कार 2014 अर्पण समारोह 51
बाल साहित्य पुरस्कार अर्पण समारोह 56
बाल साहित्य लेखन : नई चुनौतियाँ 59
युवा पुरस्कार अर्पण समारोह 61
भाषा सम्मान अर्पण समारोह 66
महत्तर सदस्यता अर्पण समारोह 67
संगोष्ठियाँ, परिसंवाद तथा सम्मेलन 72
हिंदी सप्ताह समारोह 167
अकादेमी द्वारा आयोजित कार्यशालाएँ 170
पत्रिकाएँ 170
लेखकों को यात्रा अनुदान 171
सांस्कृतिक कार्यक्रम शृंखला 172
सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम 179
लेखक से भेंट 182
कथासंधि 184
कविसंधि 186
अस्मिता 188
नारी चेतना 189
मेरे झरोखे से 192
व्यक्ति एवं कृति 194
लोक : विविध स्वर 195
आविष्कार 196
कवि अनुवादक 197
स्थापना दिवस व्याख्यान 198
साहित्य अकादेमी पुस्तकालय 199
साहित्य मंच, प्रवासी मंच, राजभाषा मंच, पुस्तक विमोचन कार्यक्रम, लेखकों पर बने वृत्तचित्रों का प्रदर्शन, सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम आदि 200
पुस्तक प्रदर्शनियाँ 206
परियोजना एवं संदर्भ कार्य 213
प्रकाशन 216
वार्षिक लेखा 2015-2016 i-xxxviii

साहित्य अकादेमी : संक्षिप्त परिचय

साहित्य अकादेमी का विधिवत् उद्घाटन भारत सरकार द्वारा 12 मार्च 1954 को किया गया था। भारत सरकार के जिस प्रस्ताव में अकादेमी का यह विधान निरूपित किया गया था, उसमें अकादेमी की यह परिभाषा दी गई है—भारतीय साहित्य के सक्रिय विकास के लिए कार्य करनेवाली एक राष्ट्रीय संस्था, जिसका उद्देश्य उच्च साहित्यिक मानदंड स्थापित करना, भारतीय भाषाओं में साहित्यिक गतिविधियों को समन्वित करना एवं उनका पोषण करना तथा उनके माध्यम से देश की सांस्कृतिक एकता का उन्नयन करना होगा। हालाँकि अकादेमी की स्थापना सरकार द्वारा की गई है, फिर भी यह एक स्वायत्तशासी संस्था के रूप में कार्य करती है। संस्था पंजीकरण अधिनियम 1860 के अंतर्गत इस संस्था का पंजीकरण 7 जनवरी 1956 को किया गया।

भारत का 'राष्ट्रीय साहित्य संस्थान' साहित्य अकादेमी साहित्यिक संवाद, प्रकाशन और उसका देशभर में प्रसार करनेवाली केन्द्रीय संस्था है तथा सिर्फ़ यही ऐसी संस्था है, जो भारत की चौबीस भाषाओं, जिसमें अंग्रेज़ी भी सम्मिलित है, में साहित्यिक क्रिया-कलापों का पोषण करती है। अपने 62 वर्षों में अधिक गतिशील अस्तित्व द्वारा इसने अपने निरंतर प्रयासों से सुरुचिपूर्ण साहित्य तथा पढ़ने की स्वस्थ आदतों को प्रोत्साहित किया है; इसने संगोष्ठियों, व्याख्यानों, परिसंवादों, परिचर्चाओं, वाचन एवं प्रस्तुतियों द्वारा विभिन्न भाषिक और साहित्यिक क्षेत्रों में अंतरंग संवाद को जीवंत बनाए रखा है; कार्यशालाओं तथा वैयक्तिक अनुबंधों द्वारा पारस्परिक अनुवादों की गति को तीव्र किया है; पत्रिकाओं, विनिबंधों, हर विधा के वैयक्तिक सृजनात्मक कार्यों, संग्रहों, विश्वकोशों, ग्रंथ-सूचियों, भारतीय लेखक परिचयकोश और साहित्येतिहास के प्रकाशन द्वारा एक गंभीर साहित्यिक संस्कृति का विकास किया है। अकादेमी ने अब तक चार हज़ार दो सौ से ज़्यादा पुस्तकें प्रकाशित की हैं, अकादेमी हर तीस घंटे में एक पुस्तक का प्रकाशन कर रही है। प्रत्येक वर्ष अकादेमी क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर की कम-से-कम तीस संगोष्ठियों का आयोजन करती है। इसके अलावा आयोजित होनेवाली कार्यशालाओं और साहित्यिक सभाओं की संख्या प्रतिवर्ष लगभग दो सौ है। ये कार्यक्रम लेखक से भेंट, संवाद, कविसंधि, कथासंधि, लोक : विविध स्वर, व्यक्ति और कृति, मेरे झरोखे से, मुलाक़ात, अस्मिता, अंतराल, आविष्कार, साहित्य मंच और सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम जैसी शृंखलाओं के अंतर्गत अन्य देशों के लेखकों एवं विद्वानों के साथ आयोजित किए जाते हैं। पिछले वर्ष से महिला लेखकों के लिए नारी चेतना, पूर्वोत्तर लेखकों के लिए पूर्वोत्तरी तथा स्थापना दिवस उत्सवों जैसी नई साहित्यिक कार्यक्रम शृंखलाओं को आरंभ किया गया है।

अकादेमी प्रत्येक वर्ष अपने द्वारा मान्यता प्रदत्त चौबीस भाषाओं में साहित्यिक कृतियों के लिए पुरस्कार प्रदान करती है, साथ ही इन्हीं भाषाओं में परस्पर साहित्यिक अनुवाद के लिए भी पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं। ये पुरस्कार साल भर चली संवीक्षा, परिचर्चा और चयन के बाद घोषित किए जाते हैं। अकादेमी उन भाषाओं के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान करने वालों को 'भाषा सम्मान' से विभूषित करती है, जिन्हें औपचारिक रूप से साहित्य अकादेमी की मान्यता प्राप्त नहीं है। यह सम्मान 'कालजयी एवं मध्यकालीन साहित्य' में किए गए योगदान के लिए भी दिया जाता है। अकादेमी प्रतिष्ठित लेखकों को महत्तर सदस्य और मानद महत्तर सदस्य चुनकर सम्मानित करती है। आनंद कुमारस्वामी और प्रेमचंद के नाम से एक 'फ़ेलोशिप' की स्थापना भी की गई है। अकादेमी ने बेंगळूरु, अहमदाबाद, कोलकाता और दिल्ली में अनुवाद-केंद्र तथा दिल्ली में भारतीय साहित्य अभिलेखागार का प्रवर्त्तन किया है। अगरतला में जनजातीय और वाचिक साहित्य परियोजना के प्रवर्त्तन के लिए परियोजना कार्यालय स्थापित किया गया है तथा और भी कई कल्पनाशील परियोजनाएँ बनाई जा रही हैं। साहित्य अकादेमी को सांस्कृतिक और भाषाई विभिन्नताओं का ज्ञान है और वह स्तरों एवं प्रवृत्तियों को ध्वस्त कर कृत्रिम मानकीकरण में विश्वास नहीं करती; साथ ही वह गठन अंतः सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और प्रयोगात्मक सूत्रों के बारे में जागरूक है, जो भारत के साहित्य की विविध अभिव्यक्तियों को एकसूत्रता प्रदान करते हैं। विश्व के विभिन्न देशों के साथ यह एकता अकादेमी की सांस्कृतिक विनिमय के कार्यक्रमों द्वारा एक अंतर्राष्ट्रीय प्रजातिगत आयाम की खोज करती है।

अकादेमी की चरम सत्ता एक निन्यानबे सदस्यीय परिषद् (सामान्य परिषद्) में न्यस्त है, जिसका गठन निम्नांकित ढंग से होता है :

अध्यक्ष, वित्तीय सलाहकार, भारत सरकार द्वारा मनोनीत पाँच सदस्य, भारत सरकार के राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के पैंतीस प्रतिनिधि, साहित्य अकादेमी द्वारा मान्यता प्राप्त भाषाओं के चौबीस प्रतिनिधि, भारत के विश्वविद्यालयों के बीस प्रतिनिधि, साहित्य-क्षेत्र में अपने उत्कृष्टता के लिए परिषद् द्वारा निर्वाचित आठ व्यक्ति एवं संगीत नाटक अकादेमी, ललित कला अकादेमी, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, भारतीय प्रकाशक संघ और राजा राममोहन राय लाइब्रेरी फ़ाउंडेशन के एक-एक प्रतिनिधि।

साहित्य अकादेमी की व्यापक नीति और उसके कार्यक्रम के मूलभूत सिद्धांत परिषद् द्वारा निर्धारित किए जाते हैं और उन्हें कार्यकारी मंडल के प्रत्यक्ष निरीक्षण में क्रियान्वित किया जाता है। प्रत्येक भाषा के लिए परामर्श मंडल है, जिसके सदस्य प्रसिद्ध लेखक और विद्वान होते हैं और उन्हीं के परामर्श पर तत्संबंधी भाषा का विशिष्ट कार्यक्रम नियोजित एवं कार्यान्वित होता है।

परिषद् का कार्यकाल पाँच वर्ष होता है। वर्तमान परिषद् अकादेमी की स्थापना के बाद तेरहवीं है और इसकी प्रथम बैठक फ़रवरी 2013 में संपन्न हुई। अकादेमी के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, भाषाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले कार्यकारी मंडल के सदस्यों और वित्त समिति के लिए सामान्य परिषद् के एक प्रतिनिधि का निर्वाचन परिषद् द्वारा किया जाता है। विभिन्न भाषाओं के परामर्श मंडल कार्यकारी मंडल द्वारा नियुक्त किए जाते हैं।

अध्यक्ष

साहित्य अकादेमी के पहले अध्यक्ष पंडित जवाहरलाल नेहरू थे। सन् 1963 में वह पुनः अध्यक्ष निर्वाचित हुए। मई 1964 में उनके निधन के बाद सामान्य परिषद् ने डॉ. एस. राधाकृष्णन् को अपना अध्यक्ष निर्वाचित किया। फ़रवरी 1968 में नवगठित परिषद् ने डॉ. ज़ाकिर हुसैन को साहित्य अकादेमी का अध्यक्ष निर्वाचित किया। मई 1969 में उनके निधन के पश्चात् परिषद् ने डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी को अध्यक्ष चुना। फ़रवरी 1973 में वह परिषद द्वारा पुनः अध्यक्ष चुने गए। मई 1977 में उनकी मृत्यु के पश्चात् उपाध्यक्ष प्रो. के. आर. श्रीनिवास आयंगर साहित्य अकादेमी के कार्यवाहक अध्यक्ष बनाए गए। फ़रवरी 1978 में प्रो. उमाशंकर जोशी अध्यक्ष निर्वाचित हुए। फ़रवरी 1983 में प्रो. वी.के. गोकाक अध्यक्ष निर्वाचित हुए। फ़रवरी 1988 में डॉ. बीरेंद्र कुमार भट्टाचार्य साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 1993 में प्रो. यू.आर. अनंतमूर्ति अध्यक्ष चुने गए। 1998 में श्री रमाकांत रथ अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 2003 में प्रो. गोपीचंद नारंग अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 2008 में श्री सुनील गंगोपाध्याय अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 2013-2017 के लिए पुनर्गठित सामान्य परिषद द्वारा प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी को 2013 में अकादेमी का अध्यक्ष चुना गया।

संविधान

साहित्य अकादेमी की स्थापना भारत सरकार के 15 दिसंबर 1952 के प्रस्ताव के अंतर्गत हुई, जिसमें अकादेमी का संविधान मूलतः अंतर्भुक्त था। अकादेमी एक स्वायत्त संस्था के रूप में कार्य करती है और अपने संविधान में आवश्यक संशोधन करने का अधिकार अकादेमी की सामान्य परिषद् में न्यस्त है। समय-समय पर इस अधिकार का प्रयोग भी किया जाता रहा है।

मान्यताप्रदत्त भाषाएँ

भारत के संविधान में परिगणित बाईस भाषाओं के अतिरिक्त साहित्य अकादेमी अंग्रेज़ी और राजस्थानी को ऐसी भाषाओं के रूप में मान्यता प्रदान कर चुकी है, जिसमें उसका कार्यक्रम क्रियान्वित किया जा सकता है। इन 24 भारतीय भाषाओं में साहित्यिक कार्यक्रम लागू करने के लिए परामर्श-मंडल गठित किए गए हैं। साहित्य अकादेमी द्वारा मान्यता प्राप्त भाषाएँ हैं—असमिया, बाङ्ला, बोडो, डोगरी, अंग्रेज़ी, गुजराती, हिंदी, कन्नड, कश्मीरी, कोंकणी, मैथिली, मलयाळम्, मणिपुरी, मराठी, नेपाली, ओड़िया, पंजाबी, राजस्थानी, संस्कृत, संताली, सिंधी, तमिळ, तेलुगु और उर्दू।

संगठन

प्रधान कार्यालय : साहित्य अकादेमी का प्रधान कार्यालय रवींद्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110001 में स्थित है। यह भव्य भवन रवींद्रनाथ ठाकुर की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में सन् 1961 में निर्मित हुआ था। इसमें तीनों राष्ट्रीय अकादेमियाँ—संगीत नाटक अकादेमी, ललित कला अकादेमी और साहित्य अकादेमी स्थित हैं।

यह कार्यालय डोगरी, अंग्रेज़ी, हिंदी, कश्मीरी, मैथिली, नेपाली, पंजाबी, राजस्थानी, संस्कृत, संताली और उर्दू के प्रकाशनों तथा कार्यक्रमों की देखरेख करता है और इन भाषाओं के संदर्भ में क्षेत्रीय कार्यालय के रूप में कार्य करता है।

क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता : सन् 1956 में स्थापित और अब 4, डी.एल.खान रोड (एस.एस.के.एम. अस्पताल के निकट) कोलकाता-700025 में स्थित यह क्षेत्रीय कार्यालय असमिया, बाङ्ला, बोडो, मणिपुरी और ओड़िया में अकादेमी के प्रकाशन और कार्यक्रमों की देखरेख करता है। इसके अतिरिक्त अंग्रेज़ी और तिब्बती भाषा की कुछ पुस्तकें भी यहाँ प्रकाशित होती हैं। यह अन्य उत्तर-पूर्वी भाषाओं में भी कार्यक्रमों का संयोजन करता है। यहाँ पर एक प्रमुख पुस्तकालय भी है।

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु : सन् 1990 में स्थापित यह क्षेत्रीय कार्यालय अंग्रेज़ी की कुछ पुस्तकों के अतिरिक्त कन्नड, मलयाळम्, तमिळ और तेलुगु में अकादेमी के प्रकाशन और कार्यक्रमों की देखरेख करता है। यह कार्यालय सेंट्रल कॉलेज परिसर, यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी बिल्डिंग, डॉ. बी.आर. आंबेडकर वीथी, बेंगळूरु-560001 में स्थित है। यहाँ पर एक बड़ा पुस्तकालय भी है।

चेन्नै कार्यालय : सन् 2000 में स्थापित यह कार्यालय बेंगळूरु कार्यालय के कुछ कामों की देखरेख करता है और मेन बिल्डिंग, गुना बिल्डिंग्स (द्वितीय तल), 443 (304), अन्नासालइ, तेनामपेट, चेन्नई-600018 में स्थित है।

क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई : सन् 1972 में स्थापित और 172, मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मार्ग, दादर, मुंबई-400014 में स्थित यह कार्यालय हिन्दी और अंग्रेज़ी के कुछ प्रकाशनों सहित गुजराती, कोंकणी, मराठी और सिंधी में अकादेमी के प्रकाशनों और कार्यक्रमों की देखरेख करता है।

प्रकाशनों की बिक्री : साहित्य अकादेमी का बिक्री विभाग 'स्वाति', मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर स्थित है। इसके अतिरिक्त अकादेमी के प्रकाशनों की बिक्री नई दिल्ली स्थित मुख्यालय और मुंबई, कोलकाता, बेंगळूरु और चेन्नई कार्यालयों तथा पुदुचेरी स्थित बिक्री केंद्र से भी की जाती है।

14 फ़रवरी 2007 को साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली के रवींद्र भवन परिसर में एक स्थायी किताब-घर का उद्घाटन किया गया। 27 जुलाई 2007 को पुदुचेरी में एक पुस्तक बिक्री काउंटर का उद्घाटन किया गया। 10 अक्तूबर 2007 को रवींद्र सरोवर स्टेडियम, डायमंड हार्बर रोड, कोलकाता में एक स्थायी बिक्री केंद्र का उद्घाटन किया गया।

पुस्तकालय : साहित्य अकादेमी का पुस्तकालय भारत के प्रमुख बहुभाषिक पुस्तकालयों में से एक है, यहाँ अकादेमी द्वारा मान्यता प्राप्त चौबीस भाषाओं में विविध साहित्यिक और संबद्ध विषयों की पुस्तकें उपलब्ध हैं। क्षेत्रीय कार्यालयों के पुस्तकालयों को संबंधित क्षेत्रीय भाषाओं के केंद्रों के रूप में स्थापित किया गया है और उन क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण भाषा पुस्तकालयों के लिए यह संपर्क संस्था के रूप में कार्य करता है।

साहित्य अकादेमी वेबसाइट : साहित्य अकादेमी की वेबसाइट http://www.sahitya-akademi.gov.in में इसकी स्थापना, उद्देश्यों, साहित्य अकादेमी की भूमिका एवं उसके इतिहास के विवरण उपलब्ध हैं। इसके अलावा अकादेमी की पुस्तकों की संपूर्ण सूची, जिसमें महत्त्वपूर्ण प्रकाशनों का भाषानुसार विवरण उपलब्ध है, उसकी पत्रिकाओं के बारे में सूचनाएँ, साहित्यिक गतिविधियाँ, विशेष परियोजनाएँ जैसे भारतीय साहित्य अभिलेखागार, अनुवाद—केंद्रों तथा जनजातीय और वाचिक साहित्य परियोजना जैसी विशिष्ट परियोजनाएँ, अकादेमी पुरस्कार तथा महत्तर सदस्यता के विवरण, पुस्तकालय के बारे में सूचना तथा गत वर्षों में संस्था की उपलब्धियों का मूल्यांकन उपलब्ध है।

प्रमुख गतिविधियाँ

- अकादेमी पुरस्कार 2015 प्रदत्त।
- अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2014 प्रदत्त।
- अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार 2015 प्रदत्त।
- अकादेमी युवा पुरस्कार 2015 प्रदत्त।
- भाषा सम्मान प्रदत्त।
- साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यताएँ प्रदत्त।
- 55 संगोष्ठियों, 48 परिसंवादों तथा 2 भाषा सम्मेलनों का आयोजन।
- 433 नई एवं पुनर्मुद्रित पुस्तकें प्रकाशित।
- साहित्य मंच, प्रवासी मंच, राजभाषा मंच, सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रमों, पुस्तक विमोचन, लेखक सम्मिलन आदि के 109 कार्यक्रम संपन्न।
- 8 कार्यशालाएँ आयोजित।
- 'लेखक से भेंट' शृंखला में 18 कार्यक्रमों का आयोजन।
- 'व्यक्ति और कृति' के अंतर्गत 6 कार्यक्रम आयोजित।
- 'मेरे झरोखे से' शृंखला में 11 कार्यक्रमों का आयोजन।
- 'लोक : विविध स्वर' शृंखला के अंतर्गत 6; 'मुलाक़ात' एवं 'युवा साहिती' शृंखला के अंतर्गत 10; 'कथासंधि' शृंखला के अंतर्गत 10, 'कविसंधि' शृंखला के अंतर्गत 16; 'अस्मिता' शृंखला के अंतर्गत 5, 'नारी चेतना' शृंखला के अंतर्गत 10 कार्यक्रमों का आयोजन।
- 154 पुस्तक-प्रदर्शनियों का आयोजन एवं सहभागिता।
- *इंडियन लिटरेचर* के 6 अंकों तथा *समकालीन भारतीय साहित्य* के 6 अंकों का प्रकाशन।
- *संस्कृत प्रतिभा* के दो अंको का प्रकाशन।

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2015

17 दिसंबर 2015 को नई दिल्ली साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की अध्यक्षता में संपन्न कार्यकारी मंडल की बैठक में वर्ष 2015 के साहित्य अकादेमी पुरस्कार के लिए 24 पुस्तकों का चयन, संबद्ध भाषाओं में त्रिसदस्यीय निर्णायक मंडल की अनुशंसाओं के आधार पर किया गया। संबद्ध भाषाओं में पुरस्कार उक्त वर्ष से तत्काल पूर्व के वर्ष से पहले के पाँच वर्षों में (अर्थात् 1 जनवरी 2009 से 31 दिसंबर 2013 के मध्य) प्रकाशित पुस्तकों पर दिया गया।

साहित्य अकादेमी पुरस्कार **2015** से सम्मानित लेखक

असमिया : कुल सैकिया, *आकाशर छबि आरु अन्यान्य गल्प* (कथा-संग्रह)
बाङ्ला : आलोक सरकार, *शोनो जवाफुल* (कविता-संग्रह)
बोडो : ब्रजेन्द्र कुमार ब्रह्म, *बायदि देंखो बायदि गाब* (कविता-संग्रह)
डोगरी : ध्यान सिंह, *परछामें दी लोऽ* (कविता-संग्रह)
अंग्रेज़ी : साइरस मिस्त्री, *क्रॉनिकल ऑफ़ ए कॉर्प्स बेअॅरर* (उपन्यास)
गुजराती : रसिक शाह, *अंते आरंभ* (खंड 1 और II) (निबंध-संग्रह)
हिंदी : रामदरश मिश्र, *आग की हँसी* (कविता-संग्रह)
कन्नड : के.वि. तिरुमलेश, *अक्षय काव्य* (कविता-संग्रह)
कश्मीरी : बशीर भद्रवाही, *जमिस त कशीरी मंजकशीर नातिया अदबुक तवारीख़* (आलोचना)
कोंकणी : उदय भेंब्रे, *कर्ण पर्व* (नाटक)
मैथिली : मनमोहन झा, *खिस्सा* (कहानी-संग्रह)
मलयाळम् : के.आर. मीरा, *आराचार* (उपन्यास)
मणिपुरी : क्षेत्रि राजेन, *अहिंना येक सिल्लिबा मङ* (कविता-संग्रह)
मराठी : अरुण खोपकर, *चलत्-चित्रव्यूह* (संस्मरण)
नेपाली : गुप्त प्रधान, *समयका प्रतिविम्बहरू* (कहानी-संग्रह)
ओड़िया : विभूति पट्टनायक, *महिषासुरर मुँह* (कहानी-संग्रह)
पंजाबी : जसविन्दर सिंह, *मात लोक* (उपन्यास)
राजस्थानी : मधु आचार्य 'आशावादी', *गवाड़* (उपन्यास)
संस्कृत : रामशंकर अवस्थी, *वनदेवी* (महाकाव्य)
संताली : रबिलाल टुडु, *पारसी खातिर* (नाटक)
सिंधी : माया राही, *महँगी मुरक* (कहानी-संग्रह)
तमिऴ : आ. माधवन, *इलक्किय चुवडुकळ* (निबंध-संग्रह)
तेलुगु : वोल्गा, *विमुक्त* (कहानी-संग्रह)
उर्दू : शमीम तारिक़, *तसव्वुफ़ और भक्ति* (तनकीदी और तकाबुली मुतालेआ) (आलोचना)

कुल सैकिया

साइरस मिस्त्री

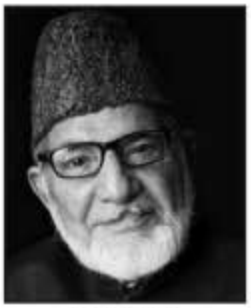

बशीर भद्रवाही

आलोक सरकार

रसिक शाह

उदय भेंब्रे

ब्रजेन्द्र कुमार ब्रह्म

रामदरश मिश्र

मनमोहन झा

ध्यान सिंह

के.वि. तिरुमलेश

के.आर. मीरा

क्षेत्रि राजेन

जसविन्दर सिंह

माया राही

अरुण खोपकर

मधु आचार्य 'आशावादी'

आ. माधवन

गुप्त प्रधान

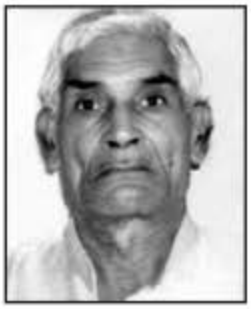

रामशंकर अवस्थी

वोल्गा

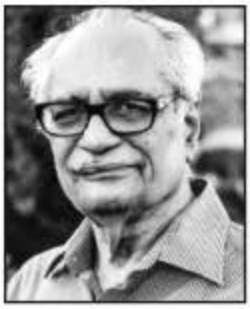

विभूति पट्टनायक

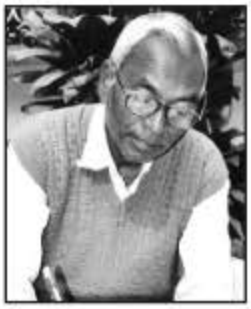

रविलाल टुडू

शमीम तारिक़

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2015 के लिए चयन समिति के सदस्यों की सूची

असमिया
1. श्री गंगापद चौधुरी
2. सुश्री निरुपमा बरगोहाईं
3. प्रो. डॉ. नमिता डेका

बाङ्ला
1. डॉ. पवित्र सरकार
2. श्री मानवेंद्र बंधोपाध्याय
3. प्रो. सुमिता चक्रवर्ती

बोडो
1. श्री गोविंद नार्ज़ारी
2. डॉ. इंदिरा बोडो
3. श्री मिहिर कुमार ब्रह्म

डोगरी
1. श्री चमन अरोड़ा
2. श्री प्रकाश प्रेमी
3. श्री एन.डी. जम्वाल

अंग्रेज़ी
1. प्रो. अवधेश कुमार सिंह
2. सुश्री नमिता गोखले
3. डॉ. तेमसुला आओ

गुजराती
डॉ. चंद्रकांत सेठ
प्रो. प्रबोध पारिख
प्रो. महेश चंपकलाल

हिंदी
1. प्रो. महेंद्र मधुकर
2. डॉ. माधव कौशिक
3. प्रो. रामजी तिवारी

कन्नड
1. श्री जी.एन. रंगनाथ राव
2. श्रीमती हेमा पट्टनशेट्टी
3. श्री राघवेंद्र पाटिल

कश्मीरी
1. श्री मो. यूसुफ टैंग
2. श्री माखनलाल कँवल
3. सुश्री नसीम शाफ़ै

कोंकणी
1. श्री बस्ती वामन शिनॉय
2. श्री माधव बोरकार
3. श्री एन. पुरुषोत्तम माल्या

मैथिली
1. डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र
2. डॉ. इंद्रकांत झा
3. डॉ. माधुरी झा

मलयाळम्
1. श्री आश मेनन
2. प्रो. एम.के. सानू
3. डॉ. वी. राजाकृष्णन

मणिपुरी
1. डॉ. कंगजम इबोहल सिंह
2. श्री ख. प्रकाश सिंह
3. श्री आर.के. जितेंद्र सिंह

मराठी
1. श्री अरुण साधु
2. प्रो. दिगंबर पाध्ये
3. श्री एन.डी महानोर

नेपाली
1. श्रीमती बिंदया सुब्बा
2. श्री कृष्ण प्रधान
3. डॉ. महेंद्र पी. लामा

ओडिया
1. श्री हर प्रसाद दास
2. डॉ. प्रतिभा सत्पथी
3. प्रो. राज किशोर मिश्र

पंजाबी
1. प्रो. मनजीत सिंह
2. प्रो. आर.एस. भट्टी
3. श्री सुरजीत पातर

राजस्थानी
1. श्री अंबिका दत्त
2. डॉ. भगवती लाल व्यास
3. श्री मालचंद तिवाड़ी

संस्कृत
1. डॉ. एन.पी. उन्नी
2. प्रो. राधाकांत ठाकुर
3. प्रो. उमा सी. वैद्य

संताली
1. श्री भोगला सोरेन
2. डॉ. नाकू हांसदा
3. श्री पृथ्वी माझी

सिंधी
1. श्रीमती कला प्रकाश
2. प्रो. नामदेव ताराचंदाणी
3. श्री नंद छुगानी

तमिळ
1. डॉ. के. चेल्लप्पन
2. श्री नंजिल नादन
3. डॉ. सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम

तेलुगु
1. डॉ. ए. मंजुलता
2. डॉ. जी. योहान बाबू
3. डॉ. के. रामचंद्र मूर्ति

उर्दू
1. प्रो. अब्दुस्समद
2. प्रो. अख्तर-उल-वासै
3. श्री प्रीतपाल सिंह बेताब

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2015

15 फ़रवरी 2016 को नई दिल्ली में अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की अध्यक्षता में संपन्न कार्यकारी मंडल की बैठक में साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2015 के लिए 23 पुस्तकों के चयन को अनुमोदित किया गया। मराठी के पुरस्कार की घोषणा बाद में की गई। अनुवाद पुरस्कार के लिए पुस्तकों का चयन संबंधित भाषा में चयन समितियों की अनुशंसा के आधार पर किया गया। संबद्ध भाषाओं में पुरस्कार उक्त वर्ष से तत्काल पहले के वर्ष के पाँच वर्षों में (अर्थात् 1 जनवरी 2009 से 31 दिसंबर 2013 के मध्य) प्रकाशित पुस्तकों पर दिया गया।

अनुवाद पुरस्कार **2015** से सम्मानित अनुवादक

असमिया : सुरेन तालुकदार, *गणदेवता* (गणदेवता, (बाङ्ला उपन्यास)—ताराशंकर बंद्योपाध्याय)

बाङ्ला : मौ दासगुप्त, *अनाम दासेर पुथि* (अनामदास का पोथा (हिंदी उपन्यास)—हज़ारी प्रसाद द्विवेदी)

बोडो : धनसि सरगियारि, *जाहारनि मोन्थाइ* (अरण्येर अधिकार (बाङ्ला उपन्यास)—महाश्वेता देवी)

डोगरी : छत्रपाल, *किन्ने पाकिस्तान* (कितने पाकिस्तान (हिंदी उपन्यास)—कमलेश्वर)

अंग्रेज़ी : सुशीला पुनीता, *भारती पुरा* (भारती पुरा (कन्नड उपन्यास)—यू.आर. अनंतमूर्ति)

गुजराती : शरीफा कासम भाई बीजलीवाला, *जेणे लाहौर न थी जो यु ऐ जन्म्यो ज नथी* (जिस लाहौर नई देख्या ओ जम्याइ नई (हिंदी नाटक)—असगर वजाहत)

हिंदी : दामोदर खड़से, *बारोमास* (बारोमास (मराठी उपन्यास)—सदानंद देशमुख)

कन्नड : एन. दामोदर शेट्टी, *कोच्चरेति* (कोच्चरेति (मलयाळम् उपन्यास)—नारायण)

कश्मीरी : रतनलाल शांत, *लल द्यद* (लल द्यद (डोगरी उपन्यास)—वेद राही)

कोंकणी : जयमाला नारायण दणाईत, *राग दरबारी* (राग दरबारी (हिंदी उपन्यास)—श्रीलाल शुक्ल)

मैथिली : देवेन्द्र झा, *बदलि जाइछ घरेटा* (बाड़ी बदले जाय (बाङ्ला उपन्यास)—रमापद चौधुरी)

मलयाळम् : के.सी. अजय कुमार, *गोरा* (गोरा (बाङ्ला उपन्यास)—रवीन्द्रनाथ ठाकुर)

मणिपुरी : नाओरम खगेंद्र सिंह, *लीशीङ अमा शुप्ना मरिफू मरिगी ममा* (हजार चौरासीर मा (बाङ्ला उपन्यास)—महाश्वेता देवी)

मराठी : बलवंत जेऊरकर, *दोन ओळींच्या दरम्यान* (दो पंक्तियों के बीच (हिंदी कविता-संग्रह)—राजेश जोशी)

नेपाली : शंकर प्रधान, *विराटाकी पद्मिणी* (विराटा की पद्मिनी (हिंदी उपन्यास)—वृंदावन लाल वर्मा)

ओड़िया : शकुंतला बलिआर सिंह, *काबेरी भली झिअटिए* (ओरू कावेरीयइ पोला (तमिळ उपन्यास)—त्रिपुरसुंदरी लक्ष्मी)

पंजाबी : बलबीर परवाना, *मनोजदास दीआं कहानीआं* (मनोजदासंक गल्प (ओड़िया कहानी-संग्रह)—मनोजदास)

राजस्थानी : मदन सैनी, *मदन बावनियो* (मदन बावनिया (हिंदी उपन्यास)—राजेंद्र केडिया)

संस्कृत : ताराशंकर शर्मा 'पाण्डेय', *अहमेव राधा, अहमेव कृष्णः* (मैं ही राधा, मैं ही कृष्ण (हिंदी कविता-संग्रह)—गुलाब कोठारी)

संताली : ताला टुडु, *बापलानिज़्* (परिणीता बाङ्ला उपन्यास)—शरतचंद्र चट्टोपाध्याय)

सिंधी : सरिता डी. शर्मा, *लल द्यद* (लल द्यद (डोगरी उपन्यास) वेद राही)

तमिळ : गौरी किरुबानंदन, *मीट्टिच* (विमुक्त (तेलुगु कथा-संग्रह)—वोल्गा)

तेलुगु : एल.आर. स्वामी, *सूफ़ी चेप्पिना कथा* (सूफ़ी परंजकथा (मलयाळम् उपन्यास)—के.पी. रामनुन्नी)

उर्दू : सुहैल अहमद फ़ारूक़ी, *गीतांजलि* (गीतांजलि (बाङ्ला कविता-संग्रह)—रवीन्द्रनाथ ठाकुर)

सुरेन तालुकदार

सुशीला पुनीता

रतनलाल शांत

मौ दासगुप्त

शरीफा कासमभाई बीजलीवाला

जयमाला एन. दणाईत

धनस्ति सरगियारि

दामोदर खड़से

देवेन्द्र झा

छत्रपाल

एन. दामोदर शेट्टी

के.सी. अजय कुमार

नाओरम खगेंद्र सिंह

बलवंत जेऊरकर

सरिता डी. शर्मा

शंकर प्रधान

मदन सैनी

गौरी किरूवानंदन

शकुंतला बलिआर सिंह

ताराशंकर शर्मा 'पाण्डेय'

एल.आर. स्वामी

बलवीर परवाना

ताला टुडु

सुहैल अहमद फारूक़ी

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2015 के लिए चयन समिति के सदस्यों की सूची

असमिया
1. श्री देबव्रत दास
2. डॉ. लक्ष्मीनंदन बोरा
3. श्री शिवानंद काकती

बाङ्ला
1. श्रीमती जया मित्र
2. प्रो. संयुक्ता दासगुप्ता
3. प्रो. आलोक राय

बोडो
1. श्री भूपेन नार्ज़ारी
2. डॉ. दीनानाथ बसुमतारी
3. डॉ. कामेश्वर ब्रह्म

डोगरी
1. डॉ. ओम गोस्वामी
2. प्रो. शिवदेव सिंह मन्हास
3. प्रो. शिव निर्मोही

अंग्रेज़ी
1. डॉ. आलोक भल्ला
2. डॉ. सी.एन. रामचंद्रन
3. डॉ. के. श्रीलता

गुजराती
1. डॉ. नितिन वडगामा
2. डॉ. रंजना अरगड़े
3. प्रो. सेजल शाह

हिंदी
1. डॉ. अनामिका
2. प्रो. जयप्रकाश
3. प्रो. मोहन

कन्नड
1. श्री बी.आर. लक्ष्मण राव
2. श्री भालचंद जयशेट्टी
3. श्री बोलवर मोहम्मद कुन्ही

कश्मीरी
1. श्री अज़ीज़ हाजिनी
2. श्री मोतीलाल केमू
3. प्रो. शफ़ी शौक़

कोंकणी
1. श्री दामोदर मावज़ो
2. डॉ. चंद्रशेखर शिनॉय
3. श्री प्रकाश पडगाँवकार

मैथिली
1. डॉ. देवेकांत झा
2. डॉ. धीरेंद्रनाथ मिश्र
3. डॉ. ताराकांत झा

मलयाळम्
1. श्री के. जयकुमार
2. डॉ. एम.आर. रगवा वॉरियर
3. डॉ. पी.ए. वासुदेवन

मणिपुरी
1. प्रो. एच. ननी कुमार सिंह
2. प्रो. ख. कुंजो सिंह
3. डॉ. तोइजम तम्फा देवी

मराठी
1. डॉ. हरीश चंद्र थोराट
2. डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे
3. डॉ. वसंत पटणकर

नेपाली
1. श्री नर बहादुर राई
2. डॉ. जीवन राना
3. श्रीमती शांति थापा

ओड़िया
1. डॉ. कैलाश पटनायक
2. प्रो. खगेश्वर महापात्र
3. डॉ. संग्राम जेना

पंजाबी
1. श्री बलबीर माधोपुरी
2. डॉ. रतन सिंह जग्गी
3. प्रो. सतनाम सिंह जस्साल

राजस्थानी
1. डॉ. हेमेंद्र सिंह चंडालिया
2. श्रीमती प्रकाश अमरावत
3. श्री मीठेश निर्मोही

संस्कृति
1. डॉ. इच्छाराम द्विवेदी
2. प्रो. केशव चंद्र दाश
3. डॉ. विरूपाक्ष वी. जड्डीपाल

संताली
1. श्री चंडी चरण किस्कू
2. डॉ. धनेश्वर मांझी
3. श्री लक्ष्मण मरांडी

सिंधी
1. श्री ढोलण राही
2. श्री होलाराम हंस
3. डॉ. बिम्मी सदारंगाणी

तमिळ
1. सुश्री इरा. मीनाक्षी
2. श्री पुवियारसु
3. मिस. जी तिलकवती

तेलुगु
1. डॉ. द्वाना शास्त्री
2. प्रो. मणिक्यांबा
3. प्रो. एस. शेषरत्नम्

उर्दू
1. डॉ. अज़ीज़ परिहार
2. डॉ. कौसर सिद्दीक़ी
3. डॉ. परवेज़ शहरयार

साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार 2015

24 जून 2015 को गुवाहाटी में अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की अध्यक्षता में संपन्न कार्यकारी मंडल की बैठक में बाल साहित्य पुरस्कार 2015 के लिए 13 पुस्तकों तथा समग्र योगदान के लिए 11 लेखकों के चयन को अनुमोदित किया गया। यह अनुमोदन इस उद्देश्य के लिए गठित संबंधित भाषाओं की त्रि-सदस्यीय चयन समितियों की अनुशंसा के आधार पर किया गया। ये पुरस्कार उक्त वर्ष से तत्काल पहले के वर्ष के पूर्ववर्ती पाँच वर्षों (अर्थात् 1 जनवरी से 2009, 31 दिसंबर 2013 के मध्य) में प्रकाशित पुस्तकों पर दिए गए। लेकिन आरंभिक 10 वर्षों, जो 2010-2019 है, के लिए पुरस्कार बाल साहित्य के क्षेत्र में लेखक के समग्र योगदान के लिए दिए जा सकते हैं, यदि कोई पुस्तक पुरस्कार के योग्य नहीं है।

बाल साहित्य पुरस्कार **2015** से सम्मानित लेखक

असमिया : अली अहमद, *बाल साहित्य* में समग्र योगदान हेतु
बाङ्ला : कार्तिक घोष, *बाल साहित्य* में समग्र योगदान हेतु
बोडो : तीरेन बोरो, *बोखली* (उपन्यास)
डोगरी : तारा चंद कलंदरी, *सतरंगी पींघ* (कविता-संग्रह)
अंग्रेज़ी : सौम्या राजेन्द्रन एवं निवेदिता सुब्रह्मणियम, *माइल विल नॉट बी क्वाइट* (उपन्यास)
गुजराती : धीरूबेन पटेल, *बाल साहित्य* में समग्र योगदान हेतु
हिंदी : शेरजंग गर्ग, *बाल साहित्य* में समग्र योगदान हेतु
कन्नड : टी.एस. नागराज शेट्टी, *बाल साहित्य* में समग्र योगदान हेतु
कश्मीरी : नईम कश्मीरी, *गोलू कथा बूझीवे* (कहानी-संग्रह)
कोंकणी : रामनाथ जी. गावडे, *सदुअनी जादूगर म्हाइ* (उपन्यास)
मैथिली : रामदेव झा, *हँसनी पान आ बजन्ता सुपारी* (उपन्यास)
मलयाळम् : एस. शिवदास, *बाल साहित्य* में समग्र योगदान हेतु
मणिपुरी : थॉकचम थोगंबा मैतेई, *इषुशा पुपु वारी लीरगे* (लोक-कथा)
मराठी : लीलाधर हेगड़े, *बाल साहित्य* में समग्र योगदान हेतु
नेपाली : मुक्ति उपाध्याय 'बराल', *मालती* (उपन्यास)
ओड़िया : स्नेहलता महांति, *बाल साहित्य* में समग्र योगदान हेतु
पंजाबी : सुखदेव मदपुरी, *बाल साहित्य* में समग्र योगदान हेतु
राजस्थानी : कृष्ण कुमार 'आशु', *धरती रो मोल* (कहानी-संग्रह)
संस्कृत : जनार्दन हेगड़े, *बाल कथा सप्ततिः* (कहानी-संग्रह)
संताली : श्रीकांत सोरेन, *हरयर मयम* (कविता-संग्रह)
सिंधी : जेठो लालवाणी, *बाल साहित्य* में समग्र योगदान हेतु
तमिळ : चेल्ला गणपति, *थेडल विट्टै* (कविता-संग्रह)
तेलुगु : चोक्कपु वेंकटरमन, *बाल साहित्य* में समग्र योगदान हेतु
उर्दू : बानो सरताज, *बच्चों के लिए यकबाबी ड्रामे* (एकांकी)

अली अहमद

सौम्या राजेन्द्रन

निवेदिता सुब्रह्मणियम

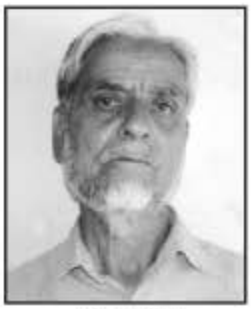
नईम कश्मीरी

कार्तिक घोष

धीरूबेन पटेल

रामनाथ जी. गावडे

तीरेन बोरो

शेरजंग गर्ग

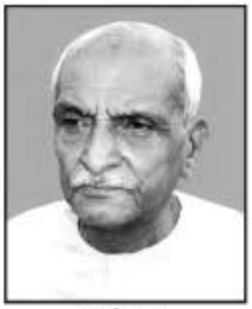
रामदेव झा

तारा चंद कलंदरी

टी.एस. नागराज शेट्टी

एस. शिवदास

थांकचम थोगंबा मैतई

सुखदेव मदपुरी

जेठो लालवाणी

लीलाधर हेगड़े

कृष्ण कुमार 'आशु'

चेल्ला गणपति

मुक्ति प्रसाद उपाध्याय

जर्नादन हेगड़े

चोक्कपु वेंकटरमन

स्नेहलता महांति

श्रीकांत सोरेन

बानो सरताज

बाल साहित्य पुरस्कार 2015 के लिए चयन समिति के सदस्यों की सूची

असमिया
1. सुश्री अनुराधा शर्मा पुजारी
2. श्री प्रसेनजित कुमार गोस्वामी
3. श्री रवींद्र बोरा

बाङ्ला
1. श्री अरुण सेन
2. श्री स्वपनरुमय चक्रवर्ती
3. श्रीमती यशोधरा रॉय चौधरी

बोडो
1. श्री हरि नारायन खाकलरी
2. श्री ऋतुराज बसुमतारी
3. डॉ. सुनील फुकन बसुमतारी

डोगरी
1. श्री दर्शन दर्शी
2. डॉ. निर्मल विनोद
3. प्रो. शशि पठानिया

अंग्रेज़ी
1. प्रो. जीजेवी प्रसाद
2. प्रो. सच्चिदानंद महांति
3. प्रो. सुधा राय

गुजराती
1. प्रो. शरीफा विजलीवाला
2. श्री उदयन ठक्कर
3. श्री यशवंत मेहता

हिंदी
1. श्रीमती चित्रा मुद्गल
2. श्री रामदरश मिश्र
3. श्री स्वयं प्रकाश

कन्नड
1. श्री फकीर मोहम्मद कटपडी
2. श्री ना. डिसू'जा
3. प्रो. राजप्पा दलवाई

कश्मीरी
1. प्रो. श्री अतीका बानो
2. श्री अयूब साबिर
3. श्री बशीर आरिफ़

कोंकणी
1. प्रो. भूषण भावे
2. सुश्री शीला नायक कोलांबकार
3. डॉ. प्रियदर्शिनी तडकोडकर

मैथिली
1. डॉ. केशकर ठाकुर
2. डॉ. मुनीश्वर झा
3. डॉ. रत्नेश्वर मिश्र

मलयाळम्
1. डॉ. के. श्रीकुमार
2. डॉ. पी.वी. कृष्णन नायर
3. श्री सुभाष चंद्रन

मणिपुरी
1. श्री आर.के. बिदुर सिंह
2. डॉ. सोइबम इबोचा सिंह
3. प्रो. टी. रत्नकुमार सिंह

मराठी
1. श्री भारत सास्ने
2. श्री सतीश कालेसकर
3. श्री यशवंत मनोहर

नेपाली
1. डॉ. एच.पी. अधिकारी
2. श्री सचिन राई
3. डॉ. मोहन पी. दहाल

ओडिया
1. श्री दास बेनहूर
2. डॉ. प्रसन्न कुमार पटनायक
3. श्री सतकड़ी होता

पंजाबी
1. श्री अमरजीत सिंह ग्रेवाल
2. डॉ. कुलदीप कौर पाहवा
3. डॉ. सुरजीत जज

राजस्थानी
1. श्री भारत ओला
2. श्री नंद भारद्वाज
3. श्री शंकर सिंह राजपुरोहित

संस्कृत
1. प्रो. गंगाधर पंडा
2. प्रो. रमेश चंद्र पंडा
3. प्रो. सत्यव्रत शास्त्री

संताली
1. श्री जदुमणि बेसरा
2. श्री खेरवाल सोरेन
3. श्री सुबोध हांसदा

सिंधी
1. श्री बंसी खूबचंदाणी
2. श्री गोवर्धन मिश्र 'घायल'
3. श्री सुंदर अगनाणी

तमिळ
1. डॉ. अब्दुल रहमान
2. श्री र. नटरासन
3. श्री. को. मा. कोदंडम

तेलुगु
1. डॉ. भोपाल
2. श्री के. श्रीनिवास
3. श्री याकूब

उर्दू
1. श्री नुसरत ज़हीर
2. डॉ. राशिद अनवर राशिद
3. श्री सुहैल अंजुम

साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2015

24 जून 2015 गुवाहाटी में प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की अध्यक्षता में संपन्न कार्यकारी मंडल की बैठक में साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2015 के लिए 23 पुस्तकों के चयन को अनुमोदित किया गया। युवा पुरस्कार के लिए पुस्तकों का चयन संबंधित भाषा चयन समितियों की अनुशंसा के आधार पर किया गया। नियमानुसार, कार्यकारी मंडल ने निर्णायक समिति के सर्वसम्मत अथवा बहुमत से की गई संस्तुति के आधार पर पुरस्कार घोषित किए। ये पुरस्कार उन लेखकों की पुस्तकों को दिए जाते हैं, जिनकी उम्र पुरस्कार वर्ष की 1 जनवरी को 35 वर्ष अथवा उससे कम हो।

युवा पुरस्कार **2015** से सम्मानित लेखक

असमिया : मृदुल हालै, *अकले आछौं कुशले आछौं* (कविता-संग्रह)
बाङ्ला : सुदीप चक्रवर्ती, *प्रेमेर साइज़ बत्रिश* (कविता-संग्रह)
बोडो : लेबेन लाल मसाहारी, *खोमसि हरनि आलारि* (कहानी-संग्रह)
डोगरी : संदीप सूफ़ी, *मुस्तक़बिल* (कविता-संग्रह)
अंग्रेज़ी : हांसदा सौभेंद्र शेखर, *द मिस्टिरियस ऐलमेंट ऑफ़ रूपी बास्के* (उपन्यास)
गुजराती : राजेश वाणकर, *मालो* (कहानी-संग्रह)
हिंदी : इंदिरा दांगी, *हवेली सनातनपुर* (उपन्यास)
कन्नड : मौनेश बडिगेर, *मायाकोलाहल* (कहानी-संग्रह)
कोंकणी : श्रीनिशा एकनाथ नायक, *खनय गेली आजी?* (कविता-संग्रह)
मैथिली : नारायण झा, *प्रतिवादी हम* (कविता-संग्रह)
मलयाळम् : आर्याम्बिका *थोनियापोलुरू पुझा* (कविता-संग्रह)
मणिपुरी : अंगोम सरिता देवी, *मी अमसुङ शा* (कविता-संग्रह)
मराठी : 'वीरा' राठोड, *सेनसायी वेस* (कविता-संग्रह)
नेपाली : सपन प्रधान, *कृति-कीर्ति* (समालोचना)
ओड़िया : सुजित कुमार पंडा, *मानसांक* (कहानी-संग्रह)
पंजाबी : सिमरन धालीवाल, *आस अजे बाकी है* (कहानी-संग्रह)
राजस्थानी : ऋतुप्रिया, *सपनां संजोवती हीरां* (कविता-संग्रह)
संस्कृत : ऋषिराज जानी, *समुद्रे बुद्धस्य नेत्रे* (कविता-संग्रह)
संताली : सुचित्रा हांसदा, *बेरा आहला* (कविता-संग्रह)
सिंधी : मनोज चावला 'तन्हा' *पिंजरा* (ग़ज़ल-संग्रह)
तमिळ : वीरपांडियन एस., *परूक्कै* (उपन्यास)
तेलुगु : पासुनूरी रवीन्द्र, *आउट ऑफ़ कवरेज एरिया* (कहानी-संग्रह)
उर्दू : अमीर इमाम, *नक्श-ए-पा हवाओं के* (ग़ज़ल-संग्रह)
(इस वर्ष कश्मीरी में पुरस्कार नहीं प्रदान किया गया।)

मृदुल हाले

हांसदा सौभेंद्र शेखर

श्रीनिशा एकनाथ नायक

सुदीप चक्रवर्ती

राजेश वाणकर

नारायण झा

लेबेन लाल मसाहारी

इंदिरा दांगी

आर्याम्बिका

संदीप सूफ़ी

मौनेश बडिगेर

अंगोम सरिता देवी

'वीरा' राठोड

ऋतुप्रिया

मनोज चावला 'तन्हा'

सपन प्रधान

ऋषिराज जानी

वीरपांडियन एस.

सुजित कुमार पंडा

सुचित्रा हांसदा

पासुनूरी रवीन्द्र

सिमरन धालीवाल

अमीर इमाम

साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2014 के लिए चयन समिति के सदस्यों की सूची

असमिया
1. श्री देबजित बोरा
2. श्री नीलिम कुमार
3. प्रो. प्रदीप आचार्य

बाङ्ला
1. श्री तपन बंधोपाध्याय
2. मिस. पापड़ी गंगोपाध्याय
3. श्री नंदेश्वर दैमारी

बोडो
1. श्री अरविंद उजीर
2. श्री जनिल कुमार ब्रह्म
3. श्री नंदेश्वर दैमारी

डोगरी
1. श्री राज राही
2. प्रो. सत्यपाल श्रीवत्स
3. प्रो. वीणा गुप्ता

अंग्रेज़ी
1. डॉ. यूनिस डी'सूज़ा
2. प्रो. एम. असदद्दीन
3. डॉ. सुकृता पॉल कुमार

गुजराती
1. श्री भारत नायक
2. प्रो. हेमंत दवे
3. श्री किरीट दूधट

हिंदी
1. श्री आलोक गुप्त
2. सुश्री अल्पना मिश्र
3. श्री चित्तरंजन मिश्र

कन्नड
1. डॉ. बी.ए. सनादी
2. श्री बिदराहल्ली नरसिम्ह मूर्ति
3. श्रीमती सी. सर्वमंगलम बाई

कोंकणी
1. श्री दिलीप बोरकर
2. डॉ. जयंती नाइक
3. श्री तुकाराम शेट

मैथिली
1. डॉ. दयानंद मिश्र
2. डॉ. इंदिरा झा
3. डॉ. योगानंद झा

मलयाळम्
1. प्रो. के.पी. संकरण
2. डॉ. एम. थॉमस मैथ्यू
3. डॉ. एन.एस. माधवन

मणिपुरी
1. श्री लैशराम सदानंद सिंह
2. प्रो. नाओरेम खगेंद्र सिंह
3. प्रो. नहकपम अरुणा

मराठी
1. डॉ. दिलीप धोंदगे
2. डॉ. आनंद पाटिल
3. प्रो. राजन गवास

नेपाली
1. श्री चक्रपाणि भट्टराई
2. श्री दल सिंह अकेला
3. श्री नंद हांगखिम

ओडिया
1. प्रो. बिजय कुमार सत्पथी
2. श्रीमती पारमिता सत्पथी
3. श्री भूपेन महापात्र

पंजाबी
1. डॉ. मनमोहन सिंह
2. डॉ. तेजवंत गिल
3. डॉ. योगराज

राजस्थानी
1. श्री बुलाकी शर्मा
2. डॉ. गजे सिंह राजपुरोहित
3. श्री उपेंद्र अणु

संस्कृत
1. डॉ. सी.एस. राधाकृष्णन
2. प्रो. मलैपुरम् जी. वेंकटेश
3. प्रो. राम कुमार शर्मा

संताली
1. श्री आदित्य मांडी
2. श्री सिंगराय मुर्मू
3. श्रीमती यशोदा मुर्मू

सिंधी
1. डॉ. जगदीश लछानी
2. सुश्री रश्मि रमाणी
3. श्री वासदेव मोही

तमिळ
1. डॉ. जी. बालासुब्रह्मण्यम
2. प्रो. टी. पज्ञामलै
3. श्री आर. वेंकटेश

तेलुगु
1. डॉ. पट्टीपका मोहन
2. डॉ. पी. कुसुम कुमारी
3. श्री वसीरेड्डी नवीन

उर्दू
1. श्री हक़्क़ानी अल-क़ासमी
2. डॉ. महताब आलम
3. श्री मेहर मंसूर

कार्यक्रम

साहित्योत्सव 2016

साहित्योत्सव 2016 का आयोजन 15-20 फ़रवरी 2016 के दौरान दिल्ली में फ़िक्की स्वर्ण जयंती सभागार, रवींद्र भवन लॉन तथा साहित्य अकादेमी सभागार में व्यापक पैमाने पर किया गया। साहित्योत्सव में देश भर के सभी उम्र के लेखकों की सहभागिता सुनिश्चित करने का प्रयत्न किया गया। साहित्योत्सव में अकादेमी प्रदर्शनी 2015, अकादेमी पुरस्कार 2015 अर्पण समारोह, लेखक सम्मिलन, संवत्सर व्याख्यान, आमने-सामने, लोक : विविध स्वर, पूर्वोत्तरी : पूर्वोत्तर एवं उत्तर भारत के लेखकों का सम्मिलन, युवा साहिति : युवा लेखकों का सम्मिलन, बालसाहिति : बच्चों और किशोरों के लिए कार्यक्रम, अलिखित भाषाओं पर परिसंवाद तथा 'गाँधी, अंबेडकर, नेहरू : निरंतरता और अलगाव' विषयक संगोष्ठी जैसे कार्यक्रम समाहित थे।

अकादेमी प्रदर्शनी का उद्घाटन

15 फ़रवरी 2016, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित किए जाने वाले साहित्योत्सव की शुरुआत अकादेमी प्रर्दशनी के उदघाट्न से हुई। प्रदर्शनी में अकादेमी की 2015 की गतिविधियों की चित्रमय प्रस्तुति के साथ-साथ पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया। प्रदर्शनी का उद्घाटन प्रख्यात ओड़िया लेखक मनोज दास द्वारा किया गया। रवीन्द्र भवन लॉन में आयोजित इस प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए उन्होंने कहा कि साहित्य अकादेमी लेखकों का स्वाभिमान

अकादेमी प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए डॉ. मनोज दास

अकादेमी 2015 प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए अतिथिगण

लाल नेहरू से जुड़ा एक रोचक संस्मरण सुनाया और क्षेत्रीय भाषाओं के साहित्य के विकास में अकादेमी की भूमिका को रेखांकित किया।

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि साहित्य अकादेमी 24 भारतीय भाषाओं में प्रकाशन और पुरस्कार का जो विस्तृत कार्य कर रही है, उसकी जानकारी ज़्यादा से ज़्यादा लोगों तक पहुँचे, यही इस साहित्योत्सव का उद्देश्य है। उन्होंने देश भर में अकादेमी द्वारा व्यापक पैमाने पर आयोजित किए जानेवाले कार्यक्रमों और पुस्तक प्रकाशन योजना की सफलता के लिए अकादेमी के अधिकारियों कर्मचारियों को बधाई दी तथा अकादेमी को प्राप्त साहित्य संसार के सहयोग एवं समर्थन के लिए लेखकों के प्रति आभार है और लेखकों ने इसके मान की हमेशा रक्षा की है। उन्होंने अकादेमी द्वारा ग़ैर मान्यता प्राप्त भाषाओं में किए जा रहे कार्यों की सराहना की तथा ज़ोर दिया कि उन भाषाओं में लिखा जा रहा श्रेष्ठ साहित्य दूसरी भाषाओं के पाठक समुदाय तक पहुँचाए जाने कि ज़रूरत है। उन्होंने अकादेमी से अपने 55 वर्ष लंबे संबंधों का जिक्र भी किया तथा 1957 का अकादेमी और उसके अध्यक्ष पंडित जवाहर

प्रदर्शनी के अवसर पर संभाषण करते हुए अकादेमी के अध्यक्ष

प्रकट किया। इससे पहले अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अकादेमी की 2015 की उपलब्धियों के बारे में बताया। उन्होंने जानकारी दी कि साहित्य अकादेमी ने पिछले साल 479 कार्यक्रम आयोजित किए तथा 189 पुस्तक प्रदर्शनियों में हिस्सा लिया। अकादेमी के इंफ़ाल और नई दिल्ली में जनजातीय एवं वाचिक साहित्य केंद्रों की भी शुरुआत की गई। इस वर्ष अकादेमी ने 426 पुस्तकों का प्रकाशन किया है तथा 117 पुरस्कार प्रदान किए हैं। इसके अलावा 9 विद्वानों को भाषा सम्मान तथा प्रख्यात लेखकों एस. एल. भैरप्पा एवं सी. नारायण रेड्डी को महत्तर सदस्यता और चीन के हिन्दी विद्वान जियाङ दिङहान को आनंद कुमारस्वामी फ़ेलोशिप प्रदान किया गया। उन्होंने बताया कि अकादेमी द्वारा कश्मीरी गेट एवं विश्वविद्यालय मेट्रो स्टेशनों पर पुस्तक बिक्री केंद्र खोले गए हैं। अकादेमी ने औसत हर 18 घंटे में एक कार्यक्रम और प्रत्येक 20 घंटे में एक किताब का प्रकाशन किया है। उन्होंने यह भी कहा कि इस वर्ष साहित्योत्सव में आदिवासी एवं वाचिक साहित्य तथा पूर्वोत्तर पर विशेष फ़ोकस किया जा रहा है।

आदिवासी भाषा काव्योत्सव

15 फ़रवरी 2016, नई दिल्ली

आदिवासी भाषा काव्योत्सव का आयोजन 15 फरवरी 2016 को अपराह्न 2.00 बजे रवींद्र भवन लॉन के सभागार में किया गया। अतिथियों का स्वागत अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव ने किया। उन्होंने बताया कि अकादेमी ने साहित्योत्सव में आदिवासी भाषाओं के साहित्य को विशेष सम्मान देने के लिए आदिवासी भाषा काव्योत्सव का आयोजन किया है। उन्होंने इसको भी रेखांकित किया कि दूसरे देशों की तुलना में, भारत में वाचिक और आदिवासीय परंपराओं की बहुतायत है। भाषिक दृष्टि से भारत जितना समृद्ध कोई और देश नहीं है। काव्योत्सव का उद्घाटन प्रख्यात विद्वान एवं शिक्षाविद् प्रो. मृणाल मिरी ने किया। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि प्रत्येक भाषा अपने आप में विशिष्ट, संपूर्ण और स्वायत्त होती है लेकिन साथ ही भाषाओं की अपनी सीमा भी होती है। चूँकि भाषाओं की शब्दावली और अभिव्यक्ति जीवन और परिवेश द्वारा निर्धारित होती है इसलिए एक भाषा की अभिव्यक्ति का अनुवाद दूसरी पूर्णरूपेण भाषा में किया जाना प्रायः संभव नहीं हो पाता।

काव्योत्सव की अध्यक्षता अकादेमी के अध्यक्ष प्रख्यात कवि एवं समालोचक प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने की। अध्यक्षीय वक्तव्य में उन्होंने कहा कि हम भाषा में बोलते ही नहीं, सोचते भी हैं। यह हमारी चिंतन प्रक्रिया से जुड़ी हुई है। भाषा चिंतन पर संस्कृत विद्वानों के योगदान को उन्होंने विशेष रूप से रेखांकित किया। इस अवसर पर अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि भारत में 400 से अधिक जनजातीय भाषाएँ हैं, लेकिन यह दुर्भाग्य है कि जनजातीय समुदायों को जैसे-जैसे हम मुख्यधारा में जोड़ रहे हैं वैसे-वैसे उनकी विशिष्टता और पहचान भी लुप्त होती जा रही है। श्री कंबार ने अकादेमी द्वारा आयोजित इस काव्योत्सव को ऐतिहासिक

उद्घाटन भाषण करते हुए प्रो. मृणाल मिरी

बताते हुए कहा कि इस तरह की राष्ट्रीय आयोजनों से आदिवासीय एवं लोक साहित्य को मज़बूती मिलेगी। काव्योत्सव के अंतर्गत देश के 16 राज्यों के आदिवासी भाषाओं के प्रतिनिधि कवि सम्मिलित हुए। उन्होंने अपनी मातृभाषा सहित हिंदी या अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ अपनी कविताओं का पाठ किया।

इस काव्योत्सव में शांता नायक (बंजारा), मानसिंह चौधरी (भीली), जोगमाया चकमा (चकमा), जितेंद्र वसावा (देहवाली), इनाम गमांग (सौरा), शिवकुमार पांडेय (हल्बी), रवींद्रनाथ कालुंदिया (हो), दैवोर्मि नोङ्पोह (वार जयंतिया), स्ट्रीमलेट डखार (खासी), शेफाली देबबंग (कोकबॅराक), आनंद माड़ी (कोया), अन्ना माधुरी तिर्की (कुडुक), अनुज मोहन प्रधान (कुइ), क्रैरी मोग चौधरी (मोग) तथा उर्मिला कुमरे (गोंडी) ने अपनी रचनाओं का पाठ किया।

भीली कवि मानसिंह चौधरी ने आदिवासी समुदाय की मुख्यधारा में सहभागिता और आदिम मानवीय अस्मिता को प्रस्तावित करते हुए पंक्तियाँ पढ़ीं। प्रकृति और मनुष्य के संबंध को पारिवारिकता के मधुर सूत्र में बाँधते हुए देहवाली भीली कवि जितेंद्र वसावा ने इसे पंक्तियों में सँजोया। शिव कुमार पांडेय की कविता ने हाशिए पर जी रहे समाज की दशा के मार्मिक चित्र प्रस्तुत किए। दैवोर्मि नोङ्पोह ने प्राकृतिक संसाधनों के लुटेरों को अपनी ज़मीन-जंगल और घर से दूर रहने का प्रतीकात्मक प्रतिरोध दर्ज किया। कुई भाषा की रचनाकार अनुज मोहन प्रधान ने विस्थापित जीवन की त्रासदी का करुण चित्र प्रस्तुत किया। कवयित्री क्रैरी मोग चौधुरी ने साहित्य के समुद्र में शीर्षक कविता में देशज शब्दों के व्यवहार को वरीयता प्रदान करते हुए धरती के संपूर्ण जीवन को रेखांकित किया।

कार्यक्रम का संचालन अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने किया।

कर्मा नृत्य की प्रस्तुति

15 फ़रवरी 2016, नई दिल्ली

साहित्योत्सव के अंतर्गत पद्मपुर संगीत समिति, बोरासंबर, ओड़िशा के कलाकारों ने बिंझल जनजाति के पारंपरिक नृत्य 'कर्मा' की प्रस्तुति की। कर्मा उपज एवं प्रजनन से जुड़ा एक आदिम पंथ-नृत्य है। यह नृत्य प्रस्तुति कर्मा पूजा से जुड़े रीति-रिवाज़ों पर आधारित है।

इस नृत्य में पवित्र हलन शाखा को औपचारिक रूप से पवित्र मंच पर स्थापित किया जाता है तथा मांदल और झांझ की विशेष ध्वनियों से देवताओं को पारंपरिक नृत्य द्वारा जाग्रत किया जाता है। धरा, अग्नि, वायु और जल देवताओं को प्रसन्न करने की दृष्टि से बिंझल संसार के पुनः सृजन के बारे में गीत तथा नृत्य द्वारा कर्मा पूजा की कथा सुनाई जाती है।

पद्मपुर संगीत समिति के कलाकारों द्वारा इस नृत्य की प्रस्तुति की गई जो बोरासंबर क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत के लिए समर्पित एक पंजीकृत संगठन है।

कलाकारों का अभिनंदन करते हुए डॉ. के. श्रीनिवासराव

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2015 अर्पण समारोह

16 फ़रवरी 2016, नई दिल्ली

साहित्योत्सव का मुख्य आकर्षण साहित्य आकदेमी पुरस्कार अर्पण समारोह रहा। दिनांक 16 फ़रवरी 2016 को सायं 5.30 बजे फ़िक्की सभागार में आयोजित एक भव्य समारोह में 24 भारतीय भाषाओं के रचनाकारों को पुरस्कृत किया गया। अतिथियों का स्वागत साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने किया। उन्होंने कहा कि साहित्य अकादेमी लेखकों की, लेखकों के लिए और लेखकों द्वारा संचालित होनेवाली संस्था है। उन्होंने साहित्य अकादेमी की प्रगति का विवरण भी दिया।

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि यह ऐतिहासिक और अनूठा मंच है जहाँ एक साथ पूरा देश मौजूद है। उन्होंने भारतीय साहित्यकारों और विदेशी रचनाकारों का तुलनात्मक अंतर करते हुए अपनी भाषा और साहित्य पर गर्व करने की बात कही। उन्होंने कहा कि लेखक का काम सत्ता बनना नहीं होता। सत्ताकांक्षी लेखक, सच्चा साहित्यकार नहीं सत्तानशीन राजनीतिक होता है। राजनीति करने वाले लेखक का मूल्यांकन साहित्यकार के रूप में नहीं होगा। रचनाकार का मूल्यांकन भाषा के भीतर होता है। उन्होंने रहीम का उदाहरण देते हुए कहा कि वे सेना में थे तो सैनिक जैसा काम भी किया होगा लेकिन हम उन्हें एक कवि के रूप में जानते-पहचानते हैं क्योंकि उन्होंने आदर्श जीवन मूल्यों को अपनाने के लिए हमें प्रेरित किया है। हम आज भी उनकी रचनाओं से संबल पाते हैं। उन्होंने कहा कि आज मातृभाषाओं पर संकट है क्योंकि हम कोलोनियल थिंकिंग से ग्रस्त हैं और हीन भावना हमारे भीतर घर कर गई है। इस सोच से हमें मुक्त होना होगा।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रख्यात उर्दू समालोचक अकादेमी के महत्तर सदस्य और पूर्व अध्यक्ष प्रो. गोपीचंद नारंग ने भाषा की शक्ति को रेखांकित करते हुए कहा कि भाषा चलती तो है अँधेरे से लेकिन उसका सफ़र उजाले की ओर होता है। भाषा जब अँधेरे-उजाले का

पुरस्कार विजेताओं के साथ मुख्य अतिथि तथा अकादेमी के सचिव, अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष

खेल खेलती है तो वह जादू करती है। उन्होंने कहा कि वाक्य के शब्दों के बीच जो खाली जगह, जो अंतराल होता है, जो ख़ामोशी होती है वह भी मुखर होती है। भाषा अपने शब्दों में से तो बोलती ही है अपनी ख़ामोशी मे से भी बोलती है। प्रो. नारंग ने मानवी यकजहती, आपसी प्रेम और अहिंसा के प्रति समर्पण की प्रस्तावना की। उन्होंने कहा कि हमारे पूरे देश के संत कवियों ने इसीलिए एक ही बात कही है – इश्क की बात। उन्होंने कबीर, और एक ज़ेन मतावलंबी चीनी संत की रचना तथा सुल्तान बाहू की वाणी का उदाहरण देते हुए कहा कि यह प्राचीन परंपरा आदि धर्मग्रंथों से होते हुए ग़ालिब की शायरी और अब तक के साहित्य में चली आई है। इसको सम्मान देने और उसे सम्हाल लेने से ही हमें सभी चुनौतियों और समस्याओं से बाहर निकलने का रास्ता मिल सकेगा।

इसके बाद 24 भाषाओं के रचनाकारों को उनकी कृतियों के लिए अकादेमी पुरस्कार प्रदान किए गए। वर्ष 2015 के साहित्य अकादेमी के पुरस्कार विजेता हैं–कुल सैकिया (असमिया), ब्रजेंद्र कुमार ब्रह्म (बोडो), ध्यान सिंह (डोगरी), साइरस मिस्त्री (अंग्रज़ी), रसिक शाह (गुजराती), रामदरश मिश्र (हिंदी), के. वि. तिरुमलेश (कन्नड), बशीर भद्रवाही (कश्मीरी), उदय भेंब्रे (कोंकणी), मनमोहन झा (मैथिली), के. आर. मीरा (मळयालम्), क्षेत्रि राजेन (मणिपुरी), अरुण खोपकर (मराठी), गुप्त प्रधान (नेपाली), विभूति पट्टनायक (ओड़िया), जसविंदर सिंह (पंजाबी), मधु आचार्य 'आशावादी' (राजस्थानी), रामशंकर अवस्थी (संस्कृत), रबिलाल टुडु (संताली), माया राही (सिंधी), आ. माधवन (तमिऴ), वोल्गा (तेलुगु), शमीम तारिक़ (उर्दू)।

अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अंगवस्त्र, एक लाख की पुरस्कार राशि का चेक और प्रतीक चिन्ह देकर रचनाकारों को सम्मानित किया। अकादेमी के सचिव ने प्रशस्ति वाचन किया। कार्यक्रम के अंत में डॉ. चंद्रशेखर कंबार, उपाध्यक्ष, साहित्य अकादेमी ने समाहार वक्तव्य में कहा कि आज के साहित्य को विश्व फलक पर पूरे सम्मान के साथ रखा जा सकता है।

पुरस्कृत रचनाकारों का मीडिया से संवाद

16 फ़रवरी 2016, नई दिल्ली

साहित्योत्सव के दौरान 16 फ़रवरी 2016 को रवींद्र भवन लॉन में पुरस्कृत रचनाकारों का मीडिया से संवाद का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के आरंभ में साहित्य अकादेमी की उपसचिव श्रीमती गीतांजलि चटर्जी ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया।

सत्र का संचालन चर्चित मीडियाकर्मी, लेखक एवं अनुवादक रफ़ीक़ मसूदी और डी.डी. नेशनल में कार्यरत डॉ. अमरनाथ अमर ने किया। श्री कुमार अनुपम, संपादक (हिंदी) ने सभी पुरस्कृत रचनाकारों का परिचय दिया। रचनाकारों से श्री रफ़ीक़ मसूदी ने भाषा और साहित्य की जीवन और समाज में भूमिका का सवाल किया जिसके जबाव में असमिया भाषा के पुरस्कृत कथाकार श्री कुल सैकिया ने कहा कि भाषा जीवन और समाज के बीच व्यवहार को आसान बनाती है और उस भाषा में लिखा गया साहित्य रचित भाषा के समाज, परिवेश, परिस्थितियों का जीवंत दस्तावेज़ होता है। जिस साहित्य में सभी का सुख-दुख, राग-विराग और संघर्ष भरपूर मात्रा होता है वह समाज और उसका देश अपने नागरिकों सहित अधिक सक्षम और सतर्क होता है।

श्री अमरनाथ अमर ने भाषा और साहित्य की सामर्थ्य और आज के समय में उसकी प्रासंगिकता का प्रश्न पूछा। प्रश्न का उत्तर देते हुए हिंदी भाषा के पुरस्कृत साहित्यकार डॉ. रामदरश मिश्र ने कहा कि भाषा दरअसल जीवन की साँस और उसाँस है। लोक

मीडिया के साथ संवाद करते हुए पुरस्कृत लेखक

जीवन और उसकी भाषा की सामर्थ्य को उन्होंने कई उदाहरणों के सहारे समझाते हुए कहा कि भाषा मनुष्य और श्रमशील समाज से बनी है और साहित्य भी। जिस साहित्य में अनुभव अधिक होते हैं वो सच्चा साहित्य होता है। साहित्य गाँव का हो या शहर के लेखक का, उसका अपनी ज़मीन, अपनी मिट्टी से जुड़ाव ही उसे सुंदर और सार्थक बनाता है।

कश्मीरी रचनाकार श्री बशीर भद्रवाही ने कहा कि आज पूरी दुनिया के सामने अनेक समस्याएँ हैं। उन सभी से टकराने के लिए, उनसे निजात पाने के लिए हमारे संत-सूफ़ी साहित्य में बहुत से उत्तर मौजूद हैं। बात को आगे बढ़ाते हुए उर्दू के रचनाकार श्री शमीम तारिक़ ने कई मक़बूल शायरों के शेर सुनाए। उन्होंने कहा कि सभी भाषाओं का साहित्य अलग-अलग है, उनके लेखक अलग-अलग हैं लेकिन हमारी समस्याएँ, हमारा जीवन एक-सा है इसलिए हमारे साहित्य में एकसूत्रता है। सभी भाषाओं का साहित्य भी अलग-अलग होकर भी एक ही साहित्य है।

अंग्रेज़ी के पुरस्कृत उपन्यासकार श्री साइरस मिस्त्री ने एक प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा कि जीवन और परिवेश बदलने के साथ-साथ भाषा और साहित्य भी अपना नया रूप लेता है। आज का साहित्य एक संपूर्ण जीवन को प्रस्तुत कर पा रहा है। तेलुगु की पुरस्कृत रचनाकार श्रीमती वोल्गा ने कहा कि अब हाशिए का शोषित पीड़ित समाज अपनी बात खुद कह रहा है। स्त्री, दलित आदिवासी और अनेक ऐसे वर्ग को अपना हक़ प्राप्त करने के लिए ज़रूरी स्वर और भाषा मिल गई है। सिंधी की रचनाकार श्रीमती माया राही ने विस्थापन के दंश को बहुत मार्मिक ढंग से प्रस्तुत करते हुए कहा कि मेरे साहित्य का असल तत्त्व विस्थापन की पीड़ा और करुणा है जिसके सहारे मैं 'महाकरुणा' की ओर गति करती हूँ। मराठी के पुरस्कृत रचनाकार श्री अरुण खोपकर ने उत्कृष्ट शैली में विभिन्न कलाओं के सांस्कृतिक महत्त्व के प्रति अपनी विशुद्ध प्रतिबद्धता को प्रकट किया और विष्णु धर्मोत्तर पुराण के रोचक प्रसंग के सहारे कलाओं के अंतर्संबंध की व्याख्या की। बोडो के पुरस्कृत रचनाकार श्री ब्रजेंद्र कुमार ब्रह्म और संस्कृत के पुरस्कृत रचनाकार राम शंकर अवस्थी ने अपने साहित्य की विशेषताओं की और साहित्य प्रेमियों का ध्यान आकृष्ट किया। कन्नड के पुरस्कृत रचनाकार श्री के. वी. तिरुमलेश ने नई टेक्नोलॉजी का पूरा उपयोग लेखन में करने के लिए प्रोत्साहित किया।

इस सत्र में पुरस्कृत रचनाकारों ने साहित्य की वर्तमान दशा-दिशा तथा प्रकाशन के संबंध में भी अपने विचार व्यक्त किए। इस विचारोत्तेजक सत्र में पुरस्कृत रचनाकारों के साथ मीडिया और साहित्य प्रेमियों के बीच बहुत सार्थक बातचीत हुई।

सांस्कृतिक कार्यक्रम : पुरस्कार अर्पण समारोह के पश्चात् रासलीला और पुंगचोलम रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। रासलीला वृंदावन के पावन कुंजों में भगवान श्री कृष्ण और गोपियों द्वारा किया गया आनंदपूर्ण नृत्य है। पुराणों और मध्यकालीन भक्ति साहित्य में इस दिव्य प्रेम, सौंदर्य, संवेदना एवं भव्यता की सार्थक, विशिष्ट एवं भरपूर उपस्थित है। कलाकारों की वेशभूषा इस नृत्य की भव्यता को और अधिक समृद्ध करती है जिसका समापन 'आरती' से होता है। वही पुंगचोलम मणिपुर का एक अनूठा शास्त्रीय नृत्य है। यह मणिपुरी संकीर्तन संगीत का प्राण है। पुंगचोलम प्रायः रासलीला के आरंभ में प्रस्तुत किया जाता है तथा नर्तक नाचते हुए पुंग (एक गोलाकार ड्रम) को बजाते हैं। पुंगचोलम प्रायः भावना का करुणा, नम्यता तथा काल एवं स्थान की अत्यधिक परिष्कृत संवेदना का मोहक मिश्रण है।

इन कार्यक्रमों की प्रस्तुति जवाहरलाल नेहरू मणिपुर डांस अकादमी के कलाकारों द्वारा किया गया, जिन्हें दर्शकों ने खूब सराहा।

लेखक सम्मिलन

17 फ़रवरी 2016, नई दिल्ली

अकादेमी पुरस्कार 2015 के सभी विजेता लेखकों ने एक सृजनात्मक लेखक/ कवि के रूप में अपनी साहित्यिक यात्रा के अनुभवों को 17 फ़रवरी 2016 की सुबह आयोजित 'लेखक सम्मिलन' में साझा किया।

आरंभ में अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने सभी का औपचारिक स्वागत किया तथा साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार को सम्मिलन की अध्यक्षता के लिए आमंत्रित किया।

सम्मिलन में असमिया भाषा के पुरस्कार विजेता श्री कुल सैकिया ने कहा, "मेरे पात्र मेरी स्मृतियों के झरोखों से निकलते हैं। वे वर्तमान में चलते हैं, अतीत में भी जाते हैं, उनका सामना शहर की कठिनाइयों से भी होता है, वे ईंट-पत्थर से बनी आसमान छूती इमारतों से परेशान भी हैं, जिनके होने से वह शुद्ध वायु नहीं ले सकते, किंतु वे इन स्थितियों को देखकर घबराते नहीं वरन् उन्हें सुलझाने की चेष्टा करते हैं।"

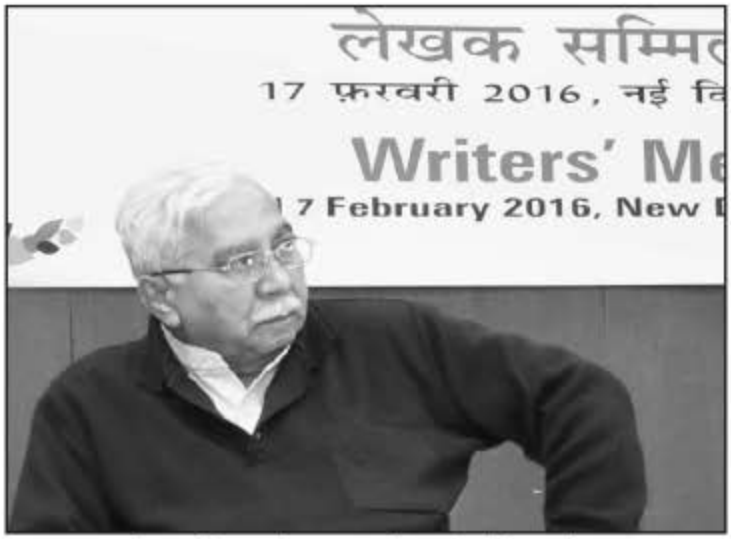

लेखक सम्मिलन की अध्यक्षता करते हुए डॉ. चंद्रशेखर कंबार

बोडो पुरस्कार विजेता श्री ब्रजेंद्र कुमार ब्रह्म ने संक्षेप में अपनी साहित्य यात्रा तथा कवि के रूप में अपने विकास के बारे में बताया। डोगरी भाषा के पुरस्कार विजेता श्री ध्यान सिंह ने कहा कि "मधुर गीतों में पुरानी स्मृतियों, घरेलू द्वंद्वों तथा दुखद विचारों का संघर्ष अच्छी तरह से चित्रित किया गया है। यद्यपि बहुआयामी तथा विविध सोच ने भावनाओं

अरुण खोपकर

के. आर. मीरा

की अभिव्यिक्ति में सकरात्मक भूमिका निभाई है। कविताओं की रचना प्रक्रिया में कई तरह की पेचीदगियाँ हैं, जो आज तक विद्यमान हैं।"

अंग्रेज़ी पुरस्कार विजेता श्री साइरस मिस्त्री ने एक लेखक और पत्रकार के रूप में अपनी साहित्यिक यात्रा और जीवन-संघर्षों के बारे में बताया। हिंदी भाषा के पुरस्कार विजेता डॉ. रामदरश मिश्र ने कहा, "मैं प्रगतिवाद की ओर उन्मुख तो हुआ किंतु अपने स्वभाव के अनुसार ही उसके साहित्यिक या राजनीतिक दल से संबद्ध नहीं हुआ। इसीलिए मैंने वस्तु और शिल्प दोनों ही क्षेत्रों में अपने को मुक्त रखा—किसी वर्जना या स्वीकृति के कठघरे में क़ैद नहीं हुआ।''

सिंधी भाषा की पुरस्कार प्राप्त श्रीमती माया राही ने बताया कि वे भारत-विभाजन की बालिका हैं, जिसका प्रभाव उनकी रचनाओं में दृष्टिगत है। उन्होंने कहा कि ''ग़ुलाम भारत से स्वतंत्र भारत आने की जो क़ीमत अदा करनी पड़ी थी, उसके कारण जिन कष्टों, कठिनाइयों, एवं संघर्षों का सामना करना पड़ा, केवल इतना ही नहीं, सुनिश्चित, व्यवस्थित, संघर्ष-विहीन जीवन से निकलकर एक अनिश्चित अव्यवस्थित एवं संघर्ष के जिस गर्त में रहना पड़ा वही समस्त प्रभाव मेरी साहित्य रचना प्रक्रिया में उल्लिखित है।"

पंजाबी के श्री जसविंदर सिंह ने अपनी रचना-प्रक्रिया के बारे में बताते हुए कहा, "कामनाओं के अनोखे रंग-ढंग, रिश्तों और परिस्थितयों में उलझा हुआ ताना-बाना चलचित्र की भाँति मेरे भीतर घूमता रहता है। विकटतम परिस्थितयों में फँसे हुए व्यक्ति की पुकार मेरे मन में निरंतर गुत्थमगुत्था होती रहती है। यही कशमकश मुझे वृत्तांत गड़ने की ओर ले जाती है।"

राजस्थानी पुरस्कार विजेता श्री मधु आचार्य 'आशावादी' ने एक लेखक के रूप में अपनी विकास-यात्रा को यों बताया, "शब्द की गहन व्याख्या को समझाने के लिए बहुत पढ़ा। जो समझ नहीं आया, उसे बड़ों से सीखा। तरुणावस्था तक पहुँचा तो समझ आया कि 'शब्द' में बहुत शक्ति है। ये सत्ताओं को बना सकता है और विद्रोही स्वरूप अख़्तियार कर ले तो इनको उखाड़ भी सकता है। इंसानी रिश्तों को बनाने और उनको संवेदनात्मक स्तर पर मजबूत बनाने का जरिया भी यही शब्द हैं।"

इस अवसर पर श्री के. वी. तिरुमलेश (कन्नड), श्री बशीर भद्रवाही (कश्मीरी), श्री उदय भेंब्रे (कोंकणी), श्री मनमोहन झा (मैथिली), श्रीमती के. आर. मीरा (मलयाळम्), श्री अरुण खोपकर (मराठी), श्री क्षेत्री राजेन सिंह (मणिपुरी), श्री गुप्त प्रधान (नेपाली), श्री विभूति पट्टनायक (ओड़िया), श्री रामशंकर अवस्थी (संस्कृत), श्री रविलाल टुडु (संताली), श्री आ. माधवन (तमिऴ) और श्रीमती वोल्गा (तेलुगु) ने भी अपनी रचना-यात्रा, प्रेरणा और प्रभावों पर संक्षेप में अपने विचार रखे।

युवा साहिती : नई फ़सल

17 फ़रवरी 2016, नई दिल्ली

साहित्योत्सव के दौरान युवा साहिती कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें भारत की 24 भाषाओं के युवा रचनाकारों को आमंत्रित किया गया था। उद्घाटन सत्र में अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी द्वारा युवा रचनाकारों के लिए संचालित की जानेवाली विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी।

अंग्रेज़ी की प्रख्यात लेखिका प्रो. सुकृता पाल कुमार ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में कहा कि हर शब्द लेखन में तराश-तराशकर व्यक्त किया जाता है और रचना में शब्दों का तो महत्त्व होता ही है लेकिन मौन की भूमिका और महत्त्वपूर्ण होती है। उन्होंने प्रख्यात नाटककार सैमुअल बैकेट सहित कुछ और नोबेल पुरस्कृत रचनाकारों के साथ के अपने संस्मरण साझा करते हुए रचनात्मकता को व्याख्यायित किया।

अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में कहा कि रचनात्मकता हमेशा नई होती है और आज की युवा पीढ़ी सौभाग्यशाली है। उन्होंने कहा कि अपनी मातृभाषा में ही सच्ची रचना हो सकती है। कार्यक्रम में बिजय शंकर बर्मन (असमिया), अशोक अंबर (डोगरी), सेजल शॉह (गुजराती), अर्जुन गोलासांगी (कन्नड), अरिबम रिमीता देवी (मणिपुरी), मर्सी मार्गेट (तेलुगु), मुईद रशीदी (उर्दू), तथा मिहिर चित्रे (अंग्रेज़ी) ने अपनी कविताओं/नज़्मों एवं ग़ज़लों का पाठ किया। इस अवसर पर नवोदय शृंखला के अंतर्गत अकादेमी द्वारा प्रकाशित तीन युवा रचनाकारों की कविता पुस्तकों (*परिवाहः* - बलराम शुक्ल, सितुही भर समय - प्रमोद कुमार तिवारी, *पीली रोशनी से भरा काग़ज़* - विशाल श्रीवास्तव) का लोकार्पण भी किया गया।

'मैं क्यों लिखता/लिखती हूँ' सत्र की अध्यक्षता

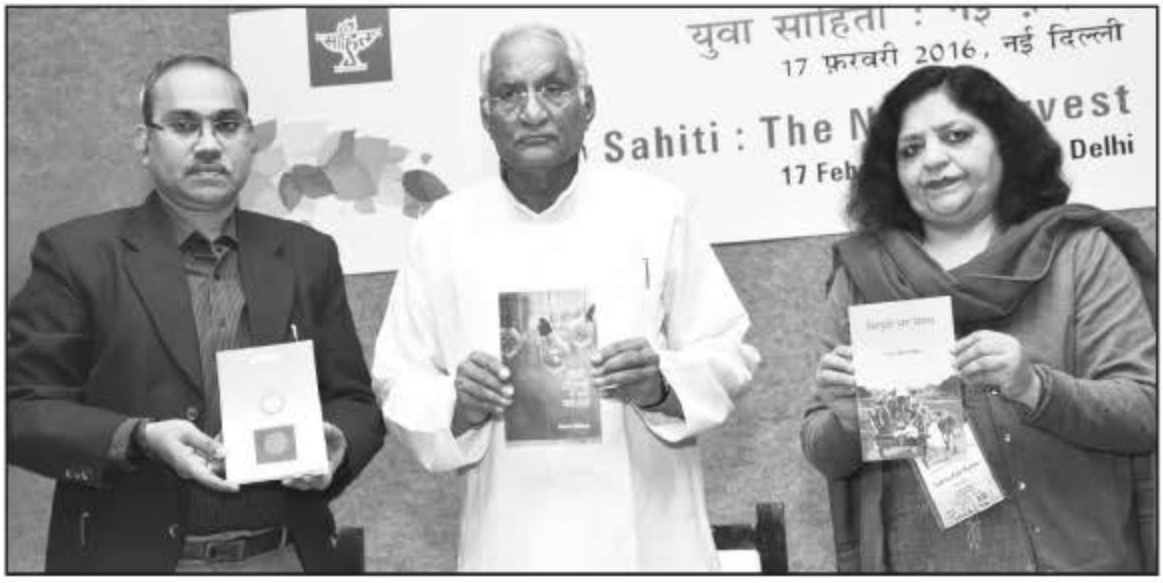

बाएँ से दाएँ : डॉ. के. श्रीनिवासराव, डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी एवं डॉ. सुकृता पॉल कुमार

बाङ्ला के सुपरिचित रचनाकार अंशुमन कर ने की। इस सत्र में राजस्थानी भाषा के गौरी शंकर नेमीवाल, हिंदी की कथाकार इंदिरा दांगी और मलयाळम् के रचनाकार वीरन कुट्टी ने अपने विचार व्यक्त किए। द्वितीय सत्र में बाङ्ला भाषा के विनोद घोषाल, कोंकणी भाषा के नरेश नाईक, मराठी भाषा के प्रशांत बागड़ तथा ओड़िया भाषा के क्षेत्रवासी नायक ने अपनी कहानियों का पाठ किया। तृतीय सत्र में कश्मीरी भाषा के महताब मंज़ूर, पंजाबी के बलकार औलख, संताली के सीमल टुडु, मैथिली के नवनीत कुमार झा, नेपाली के रणजीत गुरुंग, तमिऴ की वनीता, संस्कृत के नारायण दाश और सिंधी की संगीता बापुली ने अपनी रचनाओं का पाठ किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता ब्रजेंद्र त्रिपाठी ने की और संचालन अकादेमी के हिंदी संपादक कुमार अनुपम ने किया।

संवत्सर व्याख्यान

17 फ़रवरी 2016, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी के महत्त्वपूर्ण संवत्सर व्याख्यान माला का आयोजन 17 फ़रवरी 2016 को साहित्य उत्सव के दौरान किया गया। प्रख्यात न्यायविद् एवं गाँधीवादी विचारक न्यायमूर्ति डॉ. चंद्रशेखर धर्माधिकारी ने 'हम अपने आपको फिर से देखें, आँखों का चश्मा हटाकर' विषय पर अत्यंत विचारणीय व्याख्यान दिया। इसके पूर्व साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के श्रीनिवासराव ने श्री धर्माधिकारी का स्वागत करते हुए बताया कि साहित्य अकादेमी की कार्यकारी परिषद् ने 24 फ़रवरी 1985 को वार्षिक व्याख्यानमाला के आयोजन के लिए गठित समिति की सिफ़ारिशों को स्वीकार कर लिया, जिनके अंतर्गत साहित्यिक समालोचना से संबंधित व्याख्यानमाला को 'संवत्सर व्याख्यानमाला' की संज्ञा दी जाएगी। परिषद् द्वारा संवत्सर व्याख्यान के लिए एक नियमावली भी निर्धारित की गई, जिसके अंतर्गत प्रतिवर्ष अकादेमी-वर्षांत में ये व्याख्यान आयोजित किए जाएँगे। इस बात का भी निर्णय लिया गया कि संवत्सर व्याख्यान के अंतर्गत व्याख्यानकर्ता स्वयं किसी विषय का चयन कर दो या तीन व्याख्यान दे सकेंगे। यह भी निश्चित हुआ कि ये व्याख्यान व्याख्यानोपरांत प्रतिवर्ष पुस्तक रूप में प्रकाशित किए जाएँगे।

उन्होंने आगे कहा कि अकादेमी का पहला संवत्सर व्याख्यान सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन (अज्ञेय के नाम से विख्यात) द्वारा दिया गया था। इसी क्रम में जिन विद्वानों ने क्रमशः अपने विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान प्रस्तुत किए हैं, उनके नाम हैं—अन्नदाशंकर राय, उमाशंकर जोशी, के. आर. श्रीनिवास आयंगर, के. शिवराम कारंत, विंदा कारंदीकार, आले अहमद सुरूर, विद्यानिवास मिश्र, नवकांत बरुआ, सीताकांत महापात्र, निर्मल वर्मा, सुभाष मुखोपाध्याय, एम. टी. वासुदेवन नायर, कुँवर नारायण, निरंजन भगत, विजय तेंदुलकर, सी. डी. नरसिम्हैया, गोविंद चंद्र पांडेय, के. अयप्प पणिक्कर, गिरीश कार्नाड, यू. आर. अनंतमूर्ति, मनोज दास, अमिताभ घोष, कर्ण

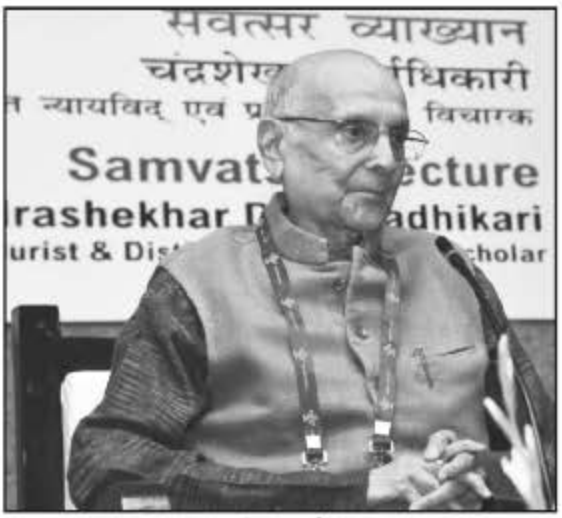

डॉ. चंद्रशेखर धर्माधिकारी

सिंह, ए. पी. जे. अब्दुल कलाम, सुरजीत पातर, भालचंद्र नेमाड़े, ओ. एन. वी. कुरुप और आशीष नंदी। इनमें से बीस व्याख्यान पुस्तकाकार भी प्रकाशित किए गए हैं।

न्यायमूर्ति चंद्रशेखर धर्माधिकारी ने अपने व्याख्यान में बताया कि उनपर गाँधी जी का प्रभाव क्यों है? श्री धर्माधिकारी ने बताया कि उन्होंने बचपन के दस साल गाँधी जी के सान्निध्य से अभिमंत्रित हुए वातावरण में यानी वर्धा में बिताए। इसके कारण वे 'स्वदेशी' के संस्कार में पले हैं।

साहित्यिक और रसिक की विलक्षणता को उजागर करते हुए उन्होंने कहा– "सृष्टि तथा जीवन में से सिर्फ़ ज्ञान ही नहीं, बल्कि आनंद खोजने की अलौकिक शक्ति साहित्य तथा साहित्यकारों में होती है। यही असली रसिकता है। उसके लिए सृष्टि अपने सुख के लिए आरक्षित 'भोगभूमि' नहीं होती। वह तो उनके लिए मानवदेवता की उपासना के लिए प्राप्त हुई 'यज्ञभूमि' होती है। यह उनकी मंगलमय भावना होती है।"

श्री धर्माधिकारी ने समय एवं परिस्थिति में परिवर्तन के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण सूत्र देते हुए कहा–"हम संक्रमण-काल से गुज़र रहे हैं। पुराने मूल्य, पुरानी प्रतिष्ठाएँ जीर्ण होकर ढह रही हैं। नए मूल्य और नई प्रतिष्ठाओं की स्थापना करनी है। जड़-यंत्रवादी और प्रतिवर्तनवादियों (Behaviourists) ने मनुष्य को यंत्राधीन और बाह्य-तंत्राधीन मान लिया था। उस यांत्रिक और तांत्रिक मनु में से हम एक नए युग में प्रवेश कर रहे हैं। इस मूल्य-परिवर्तन की सिद्धि हममें से हर एक के प्रयत्न पर निर्भर है। इसमें अनेक व्यक्तियों को आत्माहुति देनी पड़ेगी। युद्ध में जो खेत होते हैं, वे भी विजयी होते हैं; बल्कि विजय का श्रेय असल में उन्हीं का होता है।"

सहकार्य और स्नेह-युग की स्थापना के बाबत कहा- "अधिकारों के संरक्षण की अपेक्षा सत्त्व का संरक्षण महत्त्वपूर्ण है। सत्त्व की चिंता रखने से स्वत्व का संरक्षण भी होता है। अखिल मानवता की एकता अधिकारवाद की अपेक्षा कर्तव्य-भावना के पवित्र अधिष्ठान पर की जाए, तभी प्रतियोगिता एवं असूया-मत्सर के स्थान पर सहकार्य और स्नेह का युग आरंभ होगा।"

उन्होंने नागरिकता को वर्गीकृत करते हुए कहा, "आज हमारे देश में चार तरह की नागरिकताएँ हैं : 1. सांप्रदायिक नागरिकता (Denomonational Citizenship) इसके बारे में विस्तार से कहने की ज़रूरत नहीं। 2. दूसरी है हाईफ़नेटेड नागरिकता (Hypheneted Citizenship) दो शब्द जोड़ने के लिए जो लकीर या रेखा लगाई

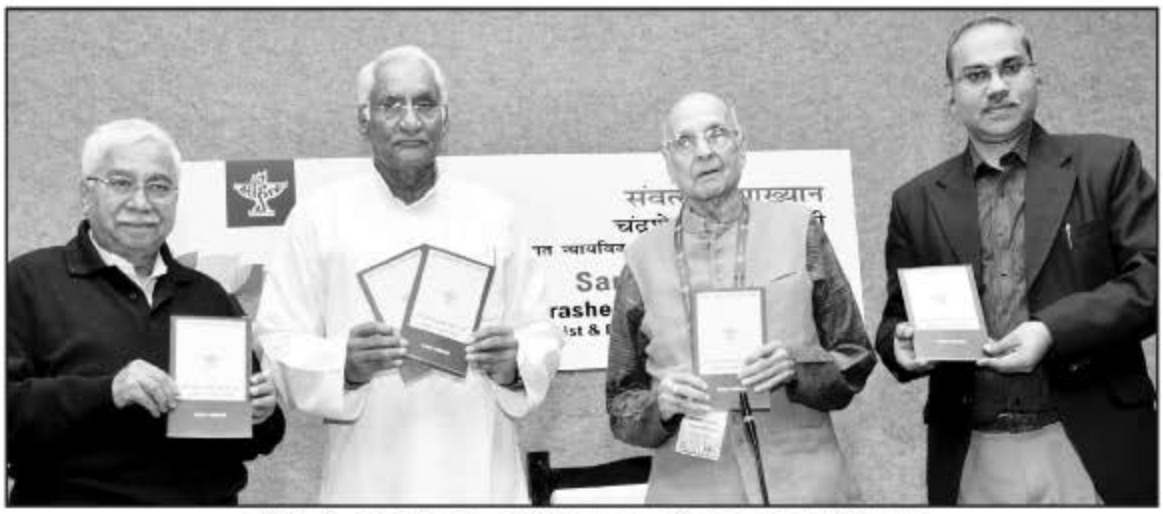

बाएँ से दाएँ : डॉ. चंद्रशेखर कंबार, डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी एवं डॉ. के. श्रीनिवासराव

जाती है, उसे हायफ़न कहते हैं। हम इसे सामासिक नागरिकता कहेंगे। तुम कौन हो? मैं महाराष्ट्रीय भारतीय हूँ, असमिया भारतीय, बंगाली भारतीय हूँ आदि। इसमें फिर गणित के सिद्धांतानुसार 'कॉमन फ़ैक्टर' यानी समान तत्त्व कैंसिल हो जाता है। और बचता है सिर्फ़ महाराष्ट्रीय, बंगाली, असमिया, तमिल आदि। 3. तीसरी है, गौण नागरिकता (Secondclass Citizenship) जिस प्रदेश में जो अल्पसंख्यक होगा, वह बहुसंख्यक लोगों की कृपा पर जीनेवाला गौण नागरिक होगा। 4. चौथी नागरिकता आंशिक नागरिकता (Fractional Citizenship) कहते हैं। आंशिक यानी जो पूर्ण नहीं माना जाता, वह 'जैसे—स्त्री, अछूत, आदिवासी आदि'। जिन्हें पूरा मानव या इनसान भी नहीं माना जाता। स्त्री तो आज भी अर्धांगिनी ही है।"

उन्होंने कहा—"पहले 'भारत छोड़ो' आंदोलन हुआ। बाद में प्रादेशिकता और भाषा आदि के नाम पर 'भारत तोड़ो' आंदोलन चला। अब 'भारत-जोड़ो' आंदोलन की आवश्यकता है, और यह 'पुण्यकर्म' सिर्फ़ साहित्यिक ही कर सकते हैं, यह मेरी भावना है और उनसे प्रार्थना भी है।"

इस विचारोत्तेजक व्याख्यान के अंत में व्याख्यानमाला पुस्तिका का लोकार्पण साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, उपाध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार, न्यायमूर्ति चंद्रशेखर धर्माधिकारी और सचिव के. श्रीनिवासराव द्वारा किया गया।

राष्ट्रीय संगोष्ठी
गाँधी, अंबेडकर, नेहरू : निरंतरता और अलगाव

18-20 फ़रवरी 2016, नई दिल्ली

साहित्योत्सव के दौरान 'गाँधी, अंबेडकर, नेहरू : निरंतरता तथा अलगाव' विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का भी आयोजन किया गया। भारतीय इतिहास और संस्कृति की प्रख्यात अध्येता डॉ. कपिला वात्स्यायन ने इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन किया। उद्घाटन वक्तव्य में उन्होंने कहा कि गाँधी, अंबेडकर और नेहरू एक बड़े दार्शनिक रहे हैं। अस्पृश्यता के लिए गाँधी और अंबेडकर दोनों के विरोध के तरीक़े अलग थे। नेहरू पूर्व और पश्चिमी संस्कृति के संयोजक के रूप में देखे जा सकते हैं। उन्होंने कई उदाहरण देते हुए गाँधी, अंबेडकर और नेहरू के व्यक्तित्व और सोच की विशिष्टता पर प्रकाश डाला।

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि तीनों में भले ही कुछ मतभेद थे लेकिन उनका लक्ष्य एक था—भारतवर्ष की उन्नति। नेहरू कभी कट्टर गाँधीवादी नहीं रहे। उन्होंने गाँधी को उद्धृत करते हुए कहा कि सत्य निर्गुण होता है, अज्ञेय होता है। सगुण और गेय तब बनता है जब सत्य अहिंसा का वस्त्र धारण करता है। अस्पृश्यता के संबंध में महात्मा गाँधी की उक्ति की उन्होंने याद दिलाई—"अस्पृश्यता को हिंदू धर्म अगर धार्मिक रूप देगा तो मैं हिंदू धर्म छोड़ दूँगा।" उन्होंने आगे कहा कि गाँधी वर्णाश्रम के समर्थक थे। उनका मानना था कि वर्णाश्रम से जीविका की समस्या कुछ हल हो सकती है। अंबेडकर वर्णाश्रम के सख़्त विरोधी थे। गाँधी ने पूरे देश की यात्रा की थी, जिसका मूल उद्देश्य था—अस्पृश्यता का विरोध। उन्होंने कहा कि गाँधी विलक्षण भविष्य वक्ता हैं। गाँधी के प्रति विश्वास व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि गाँधी और उनकी सोच लोगों को अव्यावहारिक और तात्कालिक भले लगती हो, लेकिन उन्हें दुनिया के अनेक महान

अध्यक्षीय व्याख्यान देते हुए डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
बाएँ से दाएँ : डॉ. के. श्रीनिवासराव, डॉ. कपिला वात्स्यायन, डॉ. मनोज दास,
डॉ. कृष्ण कुमार एवं डॉ. चंद्रशेखर कंबार

लोगों ने अपना रोल मॉडल स्वीकार किया है। गाँधी की प्रासंगिकता बनी रहेगी।

संगोष्ठी के विशिष्ट अतिथि प्रख्यात विद्वान एवं शिक्षाविद् डॉ. कृष्ण कुमार ने अपने सुचिंतित वक्तवय में कहा कि गाँधी एक कल्पना के साधक थे। वह कल्पना 'राष्ट्र' की नहीं थी, वह कल्पना 'स्वाधीन मनुष्य' की थी। गाँधी ने उस 'स्वाधीनता' को 'स्वदेशी' कहा है। गाँधी दरअसल 'आत्माधीनता' की बात कर रहे थे। 'स्वराज' वास्तव में 'आत्मराज' है। उन्होंने कहा कि गाँधी की कल्पना को विधान रूप देने वाले अंबेडकर हैं। संविधान, जो स्वयं एक कल्पना थी, उसे प्रशासनिक रूप से आजमाने वाले नेहरू हैं। इस प्रकार तीनों ही कल्पना के साधक हैं। कृष्ण कुमार ने कहा कि तीनों में मतभेद के बावजूद एक सहमत होते दीखते हैं क्योंकि मसला जीवन का है क्योंकि मसला स्वतंत्रता का है। स्वतंत्रता शब्दों से संरक्षित होती है। जहाँ शब्द चुकते हैं वहीं अस्त्र शुरू होते हैं।

अपने बीज वक्तव्य में प्रख्यात ओड़िया और अंग्रेज़ी लेखक तथा अकादेमी के महत्तर सदस्य डॉ. मनोज दास ने महाड़ सत्याग्रह का हवाला देते हुए अंबेडकर की अहिंसा के प्रति आस्था को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि समाजार्थिक मुद्दों पर तीनों ही चिंतकों का दृष्टिकोण हमें तत्कालीन समाज की दशा-दिशा को समझने में सहायक तो है ही, साथ ही हम आज की अनेक चुनौतियों से भी उनके विचारों द्वारा निराकरण प्राप्त कर सकते हैं।

इसके पूर्व अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अतिथियों का स्वागत किया। अपने स्वागत वक्तव्य में उन्होंने कहा कि गाँधी, अंबेडकर और नेहरू आधुनिक भारत के निर्माता हैं। उन्होंने कहा कि इन तीनों ही महापुरुषों के पास एक राष्ट्र के निर्माण के लिए सम्यक् दृष्टि थी। जैसा गाँधी, अंबेडकर, नेहरू चाहते थे, क्या हम वैसा राष्ट्र बना पाए हैं? तीनों युगपुरुषों की सोच में क्या एकता है और विभिन्न मुद्दों पर क्या मतभेद हैं, इन्हें समझने के लिए इस तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया है। हमारा उद्देश्य है कि युवा पीढ़ी इन तीनों महापुरुषों के व्यक्तित्व और विचारों को और ठीक से समझ पाए। साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने समाहार वक्तव्य दिया।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र में 'स्वतंत्रता और अहिंसा' विषय पर आलेख पाठ किए गए। इस सत्र की अध्यक्षता गुजराती के प्रख्यात रचनाकार प्रो. सितांशु यशश्चंद्र ने की। श्री नंदकिशोर आचार्य ने अपने वक्तव्य में कहा कि यदि कोई भी व्यक्ति या समाज हिंसा के किसी भी सूक्ष्म या स्थूल, प्रत्यक्ष अथाव अप्रत्यक्ष रूप के दबाव में है तो उसे स्वतंत्र नहीं कहा जा सकता। इसलिए केवल

राजनीतिक पराधीनता ही नहीं, किसी भी प्रकार का शोषण, दमन, उत्पीड़न और अपमान–प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष–हिंसा की है; और इनसे ग्रस्त समाज को स्वतंत्र समाज कहना–क्योंकि वह विदेशी शासन से मुक्त है–एक प्रवंचना ही होगी। श्री नंद किशोर आचार्य ने मौजूदा समस्याओं की ओर भी तीनों विभूतियों के विचारों के आधार पर प्रकाश डाला।

अपने वक्तव्य में श्री पुंडलिक नारायण नाइक ने कहा कि गाँधी मानते थे कि अहिंसा इंसानी समाज का क़ानून है, जो जानवरी ताक़त से श्रेष्ठ है। गाँधी की संकल्पना के केंद्र में ग्राम स्वराज्य रहा है, जिसे अहिंसक समाज के लिए वे आवश्यक मानते थे। इसमें मशीन का स्थान गौण था और मनुष्य के सक्रिय सहभाग से स्वपोषित चिरंतन विकास से समाज (self-sustained development) की बात थी।

अंबेडकर और नेहरू दोनों गाँधी से एकदम भिन्न मत रखते थे। अपने जीवन काल के अनगिनत कटु अनुभव के कारण वे गाँव समाज को हर प्रकार की बुराई तथा गंदगी का केंद्र मानते थे। इसलिए उन्होंने दलितों को गाँव छोड़ने तथा शहर जाकर मशीन अपनाने की प्रेरणा दी।

गाँधी लार्ड मैकाले की अंग्रेज़ी शिक्षा को ग़ुलामी की शिक्षा मानते थे। शिक्षा को भारतीय भाषा और स्वावलंबन से जोड़ने के लिए 'नई तालीम' का मॉडल देश के समक्ष रखा। नेहरू तथा अंबेडकर को लार्ड मैकाले प्रणीत शिक्षा से कोई परहेज़ नहीं था।

बात को आगे बढ़ाते हुए सुश्री अनुराधा राय ने अपने वक्तव्य में कहा कि गाँधीवाद संघर्ष का एक दर्शन है। गाँधियन प्रोजेक्ट को अगर हम यथार्थ रूप नहीं दे पाते तो यह हमारी अक्षमता है और इससे हमारी क्षति होगी। द्वितीय सत्र में पश्चिम के प्रति नज़रिया विषय पर व्याख्यान दिए गए। इस सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात मराठी रचनाकार डॉ. भालचंद्र नेमाड़े ने की तथा श्री मालचंद तिवाड़ी और श्री कुणाल चट्टोपाध्याय ने आलेख पाठ किए।

राष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन चार सत्र आयोजित किए गए। 'अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता' विषयक सत्र की अध्यक्षता प्रो. एस.एल. भैरप्पा ने की। इस सत्र में प्रो. सुधीश पचौरी और प्रो. मकरंद परांजपे ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रो. सुधीश पचौरी ने कहा कि संविधान में प्रदत्त बुनियादी अधिकारों में से आज़ादी भी एक है, लेकिन वह दूसरे के लिए परेशानी की बायस न बने, यह

संगोष्ठी का तृतीय सत्र

संगोष्ठी का चतुर्थ सत्र

भी ज़रूरी है। उन्होंने कहा कि गाँधी की सहनशीलता न संविधानगत है न क़ानूनगत, बल्कि अहिंसा ग्रस्त निजी नैतिकता से जुड़ी है। यह शायद महात्मा बुद्ध, ईसा मसीह और अपने जीवन के उदाहरणों से उनको मिली है, यहाँ सहिष्णुता एक निजी उद्यम है। उन्होंने कहा कि आपातकाल तानाशाही का पहला मुक़म्मल राजनीतिक कंस्ट्रक्ट था। उससे लड़ना भी उतना ही बड़ा राजनीतिक कंस्ट्रक्ट था। श्री मकरंद परांजपे ने अपने वक्तव्य में कुछ ताज़ा हालात का ज़िक्र करते हुए कहा कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता मनुष्य के नागरिक अधिकारों में बहुत महत्त्वपूर्ण है और इस अधिकार के प्रति नकार अथवा अवहेलना का भाव निराशाजनक स्थिति पैदा करती है। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में श्री एस. एल. भैरप्पा ने कहा कि विरोध करने के लिए विरोध एक एकांगी सुनियोजित चाल है। इससे एक समूह की अभिव्यक्ति का सवाल स्वयं प्रश्नांकित हो जाता है।

'स्त्री और समानता' विषयक सत्र की अध्यक्षता डॉ. रुक्मिणी भाया नायर ने की। इस सत्र में अपना आलेख प्रस्तुत करते हुए सुश्री एस. फाउस्टिना 'बामा' ने कहा कि महात्मा गाँधी, बाबासाहेब अंबेडकर और जवाहर लाल नेहरू के बिना हम भारतीय संविधान की भूमिका को प्रचारित नहीं कर सकेंगे। ये तीनों ही विभूतियाँ हमारी राह के प्रकाश स्तंभ हैं। उन्होंने कहा कि हम किसी नए सामाजिक अधिकार के बारे में प्रश्न नहीं कर रहे, हम केवल चाहते हैं कि हमसे समान व्यवहार किया जाए।

सुश्री उर्मिला पवार ने अपने वक्तव्य में स्त्री के अधिकारों और बराबरी का दर्जा दिलाने के लिए महात्मा गाँधी, डॉ. अम्बेडकर और जवाहर लाल नेहरू के विभिन्न कार्यों का ज़िक्र किया।

सुश्री रक्षंदा जलील ने वर्तमान समय और समाज में महिलाओं की वास्तविक जीवन-स्थिति की पड़ताल करते हुए कहा कि स्त्रियाँ जागरूक हुई हैं, यह बहुत सकारात्मक और आशा से भरी स्थिति है।

'जाति और समानता' विषयक सत्र की अध्यक्षता प्रो. के. सच्चिदानंदन ने की। श्री राजकिशोर, प्रो. के. इनोक और श्री रामदास भटकल ने अपने विचार व्यक्त किए। श्री राजकिशोर ने कहा कि जाति और समानता के रिश्ते को एकतरफ़ा निगाह से नहीं देखना चाहिए। प्रश्न यह है कि जाति समानता के रास्ते में बाधा पैदा

करती है या समानता के अभाव में जाति पैदा हुई है। उन्होंने कहा कि जाति के ख़ात्मे का आर्थिक विकास से गहरा संबंध है। असमान विकास जाति की जड़ों को मज़बूत करता है, क्योंकि वह नए-नए सामाजिक सोपान पैदा करता है। प्रो. के. इनोक ने कहा कि जाति, जनजाति और वर्गों के आधार पर जब सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक भेदभाव और असमानताओं का ख़ात्मा होगा और शैक्षणिक अवसर उपलब्ध किए जाएँगे तो मौजूदा स्थिति बदलेगी। श्री रामदास भटकल ने गाँधी और अंबेडकर के विभिन्न विचारों के आधार पर विवेचन किया और कहा कि डॉ. अंबेडकर का मानना था कि बुद्ध और कार्ल मार्क्स का उद्देश्य समान था। उन्होंने निजी संपत्ति के विषय में दोनों की स्थापनाओं का उदाहरण दिया।

संगोष्ठी का पंचम सत्र

'भाषा का प्रश्न' विषयक सत्र की अध्यक्षता डॉ. भालचंद्र नेमाड़े ने की। उन्होंने कहा कि भाषा, मनुष्य की जैविक, भौगोलिक और सांस्कृतिक ज़मीन की परिचायक होती है। उन्होंने 'स्वदेशी' संस्कृति के तत्त्वों को अपनाने की आवश्यकता पर बल दिया।

इस सत्र में श्री पृथ्वी- दत्त चंद्रशोभी और श्री सोयम लोकेंद्रजित सिंह ने क्रमशः 'भाषाई प्रश्न के तीन आयाम' तथा 'भाषा, संप्रेषण एवं प्रभुत्व' विषयक आलेख प्रस्तुत किए।

'गाँधी, अंबेडकर, नेहरू : निरंतरता और अलगाव' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी के अंतिम दिन तीन सत्रों में विद्वानों द्वारा 'अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक', 'संस्कृति और शिक्षा' तथा 'धर्म और लोकतंत्र' मुद्दे पर केंद्रित विचार-विमर्श किया।

संगोष्ठी में उपस्थित श्रोता-समूह

'अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक' सत्र की अध्यक्षता श्री नंदकिशोर आचार्य ने की। इस सत्र में श्री राणा नायर और श्री प्रवीण पंड्या ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री राणा नायर ने अपने वक्तव्य में डॉ. अंबेडकर द्वारा शिक्षा और समानता के अधिकारों के संघर्ष और कार्यों को रेखांकित किया। उन्होंने वर्तमान समय में हुई

कथकली शैली में ओथेलो की प्रस्तुति

कई घटनाओं का उदाहरण देते हुए अत्याचार और शोषण का मुद्दा उठाया। श्री प्रवीण पंड्या ने कहा कि गाँधी ने मुख्य रूप से तीन प्रकार के अल्पसंख्यकों का उल्लेख किया है। एक धार्मिक, दूसरे सामाजिक और तीसरे राजनीतिक। उन्होंने कई साहित्यिक रचनाओं के हवाले से कहा कि इरावती कर्वे के 'युगांत' में मयसभा निबंध में खांडव वन दहन का प्रसंग है। हम दरअसल 'खांडव वन सिंड्रोम' से ग्रस्त हैं। उन्होंने आगे कहा कि गाँधी, अंबेडकर, नेहरू ने बड़ी जद्दोजहद के साथ आधा पुल तो बनाकर दिया ही है। अब आधा हमें बनाना है। अध्यक्षीय वक्तव्य में श्री नंदकिशोर आचार्य ने कहा कि जो संख्या में कम हैं, लेकिन शक्ति संपन्न हैं, उन्हें अल्पसंख्यक नहीं माना जा सकता। आर्थिक दृष्टि से अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक कौन है, इस पर विचार किया जाना चाहिए।

'संस्कृति और शिक्षा' विषयक सत्र की अध्यक्षता प्रो. एच. एस. शिवप्रकाश ने की। इस सत्र में आलेख प्रस्तुत करते हुए सुश्री नीलांजना देव ने कहा कि गाँधी, अंबेडकर, नेहरू और राधाकृष्णन जैसे चिंतकों की सोच प्राचीन भारतीय संस्कृति और दर्शन पर आधारित रही है। उन्होंने भारतीय दर्शन और प्राच्य दर्शन के हवाले से तीनों की भूमिका और कार्यों की विवेचनात्मक रूपरेखा प्रस्तुत की।

श्री सत्यनारायण साहू ने डॉ. अंबेडकर की संस्कृति के संबंध में कही बातों को अपने वक्तव्य में रेखांकित करते हुए कहा कि तीनों ही विभूतियों का कृतित्व सहमति-असहमति के बावजूद भारतीय समाज में निर्णायक परिवर्तन करने में काफी हद तक सफल रहा है, लेकिन अभी भी बहुत-सी बुरी परिस्थितियाँ बदली जानी हैं, जिसके लिए हमें इन तीनों ही चिंतकों के दृष्टिकोण को पुनः समझना बहुत ज़रूरी है। प्रो. एच. एस. शिवप्रकाश ने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि यह चिंताजनक है कि हम अभी तक बहुत से मूलभूत प्रश्नों को हल नहीं कर सके।

'धर्म और लोकतंत्र' विषयक सत्र की अध्यक्षता डॉ. पुरुषोत्तम अग्रवाल ने की। डॉ. सत्यकाम बरठाकुर ने गाँधी, अंबेडकर और नेहरू के लोकतंत्र संबंधी विचारों को उद्धृत करते हुए कहा कि तीनों इसके लिए मतैक्य थे कि देश के लोकतांत्रिक स्वर को बनाए रखने कि लिए धर्म को अवरोधक नहीं बनने देना चाहिए। डॉ. श्रीभगवान सिंह ने 'धर्म के सदर्भ में गाँधी-विचार' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया और कहा कि यह ध्रुव सत्य है कि गाँधी जी के चिंतन एवं कर्म में धर्म सर्वोपरि था। इस सत्र में श्री शाहबाज़ हक़बरी ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए।

पूर्वोत्तरी : उत्तर-पूर्व और उत्तरी लेखक सम्मिलन

18 फ़रवरी 2016, नई दिल्ली

गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी उत्तर-पूर्व एवं उत्तरी क्षेत्र के लेखकों को विशेष प्रतिनिधित्व देने के लिए 'पूर्वोत्तरी' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। समारोह का उद्घाटन करते हुए प्रख्यात असमिया लेखक श्री लक्ष्मीनंदन बोरा ने कहा कि उत्तर-पूर्व के बहुत से लेखक शेष भारत के रचनाकारों को पढ़ रहे हैं और सीख रहे हैं। आज उनका लेखन शिल्प और कथ्य के स्तर पर काफ़ी परिपक्व है। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि जितनी विविधता उत्तर-पूर्व और उत्तरी भाषाओं और संस्कृति में पाई जाती है, उतनी कहीं नहीं है। उन्होंने प्रिंट और इलेक्ट्रानिक मीडिया में हाशिए की भाषाओं पर संकट को उचित जगह न मिल पाने के बारे में गहरी चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि उत्तर-पूर्व और उत्तरी साहित्य आज साहित्य अकादेमी के प्रमुख एजेंडे में है। "मैं क्यों लिखता/लिखती हूँ?" सत्र की अध्यक्षता श्रीमती रीता चौधुरी ने की। श्री ऍरविंद उज़िर (बोडो), श्री वीरेंद्र जैन (हिंदी), श्री विक्रम संपत (अंग्रेज़ी), श्रीमती लाइरेनलकपम इबेम्हल देवी (मणिपुरी) और श्री कृष्ण कुमार तूर (उर्दू) ने अपने वक्तव्य दिए।

कहानी-पाठ सत्र की अध्यक्षता डॉ. एल. जॅयचंद्र सिंह ने की और श्रीमती मणिका देवी (असमिया) और श्री रूप सिंह चंदेल (हिंदी) ने अपनी कहानियों का पाठ किया। अगला सत्र काव्य-पाठ का था जिसकी अध्यक्षता श्री लीलाधर मंडलोई ने की। सर्वश्री प्राणजित बोरा (असमिया), सुशील बेगाना (डोगरी), अब्दुल रशीद शाद (कशमीरी), लोंड्जम इबोतोम्बी सिंह (मणिपुरी), एफ़ लालज़ुइथाङ (मिज़ो), कृतिमणि खतिवाड़ा (नेपाली), सतीश गुलाटी (पंजाबी), चंद्र भूषण झा (संस्कृत) और श्रीमती यशोदा मुर्मू (संताली) ने अपनी कविताएँ सुनाईं। सत्र का संचालन देवेंद्र कुमार देवेश ने की।

उद्घाटन सत्र में डॉ. के. श्रीनिवासराव, श्री लक्ष्मीनंदन बोरा, डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश और प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

आमने-सामने कार्यक्रम

18 फ़रवरी 2016, नई दिल्ली

साहित्योत्सव में आयोजित एक अन्य कार्यक्रम 'आमने-सामने' में 7 पुरस्कृत लेखकों से प्रतिठित साहित्यकारों और विद्वानों ने बातचीत की। प्रत्येक वर्ष यह कार्यक्रम कुछ चुनिंदा पुरस्कार विजेताओं के साथ प्रस्तुत किया जाता है, ताकि साहित्य-प्रेमी उनके व्यक्तित्व तथा कृतित्व के बारे में कुछ और अधिक परिचित हो सकें। इस बातचीत से लेखकों की रचना प्रक्रिया के कई पहलू सामने आए। श्री अरुण खोपकर (मराठी लेखक) से श्री कुमार केतकर, श्रीमती के.आर. मीरा (मलयाळम् लेखिका) से श्रीमती मीना टी. पिळ्ळै, श्री कुल सैकिया (असमिया लेखक) से सुश्री स्तुति गोस्वामी, श्री के.वि. तिरुमलेश (कन्नड लेखक) से श्री विवेक शानबाग, श्री साइरस मिस्त्री (अंग्रेज़ी लेखक) से सुश्री अर्शिया सत्तार, श्रीमती वोल्गा (तेलुगु लेखिका) से श्री जे.एल. रेड्डी और डॉ. रामदरश मिश्र (हिंदी लेखक) से डॉ. सुरेश ऋतुपर्ण ने बातचीत की।

श्री खोपकर से चित्रकला एवं संगीत पर फ़िल्म बनाते हुए आइंस्टीन के फ़िल्म सौंदर्यशास्त्र की प्रेरणा की बहुमुखी अवधारणा पर कला से जुड़ी है, उसका प्रतीकात्मक रिश्ता है तथा संपूर्णता में उसकी कुछ विशिष्ट भूमिका होती है।

श्रीमती मीना टी. पिल्लै से केरल में स्त्रियों को स्थिति, पुरुष आधिपत्य के प्रत्युत्तर, स्त्री लेखन के प्रति पितृसत्तात्मक प्रतिरोध तथा स्त्री लेखन एवं पत्रकारिता में स्त्री से संबंधित प्रश्न किए गए। श्रीमती मीरा ने कहा कि वे केरल में स्त्रियों के खोए हुए जीवन को पुनः प्रतिष्ठित करना चाहती थीं और उन क्षेत्रों में काम करना चाहती थीं, जिनमें पहले स्त्रियों ने कार्य नहीं किया।

श्री कुल सैकिया ने स्वयं से पूछे गए सवालों के जवाब में कहा कि प्रशासक के रूप में भी कहीं-न-कहीं जन सेवा ही की जाती है। सामाजिक यथार्थ, विज्ञान कथा लेखन तथा अन्य पक्षों पर भी उनसे बातें की गईं।

श्री के.बी. तिरुमलेश ने अपनी साहित्य यात्रा पर प्रकाश डाला तथा एक अनुवादक, लेखक तथा पाठक के रूप में अपने अनुभवों को साझा किया। श्री साइरस मिस्त्री से उनकी कथाओं में अभिव्यक्त सपनों, उनकी प्रारंभिक कृतियों तथा पारसी लाश ढोनेवालों से संबंधित उनके शोध-कार्य को लेकर सवाल किए गए।

श्रीमती वोल्गा से उनकी साहित्यिक यात्रा, उनके लेखन में स्त्री विमर्श तथा तेलुगु स्त्रीवादी लेखन को लेकर प्रश्न पूछे गए।

श्री रामदरश मिश्र ने पूछे गए प्रश्नों के उत्तर में अपनी साहित्यिक यात्रा के अनुभव साझा किए तथा शहरी जनजीवन में घटती संवेदना और इक्कीसवीं सदी में साहित्य के भविष्य पर अपने विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम का संचालन साहित्य अकादेमी की उपसचिव श्रीमती रेणु मोहन भान ने किया।

परिसंवाद : भारत की अलिखित भाषाएँ

19 फ़रवरी 2016, नई दिल्ली

साहित्योत्सव के पाँचवें दिन भारत की अलिखित भाषाओं पर एक परिसंवाद का आयोजन किया गया। परिसंवाद का उद्घाटन प्रख्यात भाषाविद् श्री देवी प्रसन्न पटनायक ने किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष श्री विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने की। श्री महेंद्र कुमार मिश्र ने उद्घाटन सत्र में बीज वक्तव्य दिया। कार्यक्रम के प्रारंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अतिथियों का स्वागत किया और बताया कि साहित्य अकादेमी 24 भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त देश की अलिखित भाषाओं के संरक्षण और संवर्धन के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने साहित्य अकादेमी द्वारा देश के विभिन्न हिस्सों की अलिखित भाषाओं/मौखिक परंपरा के साहित्य को लिपिबद्ध कर प्रकाशित करने के प्रयासों की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि अलिखित

बाएँ से दाएँ : डॉ. के श्रीनिवासराव, डॉ. महेंद्र कुमार मिश्र, श्री देवी प्रसन्न पट्टनायक एवं डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

भाषाओं और साहित्य पर केंद्रित इस आयोजन में 'अलिखित भाषाओं के लिपीकरण की चुनौतियाँ' और 'अलिखित साहित्य/ मौखिक परंपरा' विषय पर प्रख्यात विद्वान अपने विचार व्यक्त करेंगे।

उद्घाटन वक्तव्य में श्री देवी प्रसन्न पटनायक ने लुप्त होती भाषाओं के संकट पर गहरी चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि भाषाओं के जीवन पर संकट जिन देशों में सबसे अधिक है, उनमें भारत पूरे विश्व में शीर्ष स्थान पर है। उन्होंने बताया कि अंतरराष्ट्रीय मैप में दी गई सूची में 196 संकटग्रस्त भाषाएँ भारत की हैं, जिन्हें पाँच चरणों में बाँटा गया है। उन्होंने कहा कि विश्व में भारत सर्वाधिक भाषिक विविधता की जनसंख्या वाले देशों में एक है। इसलिए हमारी ज़िम्मेदारी और बढ़ जाती है। शिक्षा के महत्त्व को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा कि शिक्षा, ज्ञान से समृद्ध संसार में दाख़िल होने का पासपोर्ट है। नई टेक्नोलॉजी ने अभिव्यक्ति के नए आयाम तो खोले ही हैं, साथ ही एक अवसर भी दिया है कि हम अलिखित को विभिन्न तरीक़ों से दर्ज कर संरक्षित कर सकें।

प्रख्यात विद्वान और लोकसाहित्यविद् श्री महेंद्र कुमार मिश्र ने बीज वक्तव्य में अपने कार्यकारी अनुभवों के हवाले से कई महत्त्वपूर्ण उदाहरण देते हुए लोक और शास्त्र को परिभाषित किया। उन्होंने कहा कि शास्त्र और लोक में कई साम्य हैं। कालिदास के एक श्लोक में जो कथ्य है, संभव है कि किसी लोकगीत या लोककथा में भी वही कथ्य मिल जाए। उन्होंने लोकाचारों की व्याख्या करते हुए कहा कि संस्कृति के चार स्तर के लोकाचार प्राचीनकाल से भारतीय लोक जीवन में प्रचलित और प्रतिष्ठित रहे हैं। उन्होंने कहा कि निश्चित तौर पर शिक्षित मनुष्य देश का मस्तिष्क हैं लेकिन लोक देश की आत्मा है। ओरल सोसाइटी की विशेषता बताते हुए उन्होंने रेखांकित किया कि ओरल सोसाइटी के लिए समय गौण है, घटनाएँ और परिस्थितियाँ उसके समय को प्रस्तुत करती हैं। अलिखित भाषाओं के जीवन पर मँड़राते ख़तरे को अत्यंत गंभीर बताते हुए उन्होंने कहा कि हमें इस ओर बहुत संवेदना के साथ विचार करने की आवश्यकता है क्योंकि यह हमारी आदिमता का साक्ष्य है, जिसे संरक्षित करना हमारी निजी और सामूहिक दोनों ही तरह की ज़िम्मेदारी है।

अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि भारत का लोक साहित्य और लोक भाषाएँ अत्यंत समृद्ध हैं। साहित्य अकादेमी के मुख्य एजेंडे में भाषाओं का संरक्षण और संवर्धन है और अकादेमी इसके लिए विशेष रूप से सजग है।

'अलिखित भाषाओं के लिपीकरण की चुनौतियाँ' विषयक सत्र की अध्यक्षता डॉ. अवधेश कुमार मिश्र ने की। प्रो. बी. रामकृष्ण रेड्डी, प्रो. प्रमोद पांडेय और प्रो. गणेश मुर्मू ने आलेख पाठ किए। अलिखित 'साहित्य/ मौखिक परंपरा' विषयक सत्र में लोक साहित्य पर चर्चा हुई। श्री भगवान दास पटेल ने इस सत्र की अध्यक्षता करते हुए कहा कि जनजातीय समाज में सामूहिकता और समानता है। स्त्रियों की स्वतंत्रता और समानता हमें आदिवासी साहित्य से सीखना चाहिए। श्री इंद्रनील आचार्य ने कहा कि भाषा और साहित्य एक दूसरे पर अन्योन्याश्रित हैं। श्री वसंत निर्गुणे ने कहा कि जनजाति के लोग एक समय में कभी नहीं जीते। वे तीनों समय में जीते हैं। इसलिए उन्हें अपनी उम्र तक का बोध नहीं होता। उन्हें किसी जन्म तिथि की ज़रूरत नहीं होती। वे किसी सामूहिक संहार के पक्ष में कभी नहीं रहे।

सत्र के अंत में श्रोताओं ने महत्त्वपूर्ण सवाल पूछे और विशेषज्ञों ने समुचित जवाब दिए। कार्यक्रम का संचालन अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने किया।

संगोष्ठी
अनुवाद चेतना और भारत में भारतीय साहित्यिक परंपराएँ

20 फ़रवरी 2016, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा साहित्योत्सव के अंतिम दिन 'अनुवाद चेतना और भारत में भारतीय साहित्यिक परंपराएँ' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी के विशिष्ट अतिथि प्रख्यात विद्वान डॉ. इंद्रनाथ चौधुरी ने कहा कि अनुवाद के लिए अंग्रेज़ों का नज़रिया औपनिवेशिक था। उन्होंने उन्हीं कृतियों को अनुवाद के लिए चुना,

बाएँ से दाएँ : डॉ. अवधेश कुमार सिंह, डॉ. चंद्रशेखर कंबार, डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, डॉ. इंद्रनाथ चौधुरी एवं डॉ. के. श्रीनिवासराव

जिनसे भारत के प्रति उनके नज़रिए की पुष्टि होती थी। श्री चौधुरी ने भारतीय साहित्य परंपराओं की लंबी कड़ी का हवाला देते हुए कहा कि संस्कृत भाषा के एकाधिकार होने के कारण या सत्ता से उसकी नज़दीकियों के चलते उस समय की अन्य भाषाओं की गहरी उपेक्षा की गई।

संगोष्ठी का बीज वक्तव्य प्रसिद्ध भाषाविद् डॉ. अवधेश कुमार सिंह ने दिया। उन्होंने अनुवाद की भारतीय साहित्यिक परंपरा को चार भागों में बाँटकर अपनी बात को स्पष्ट किया। ये काल थे—शास्त्रीय काल (100-1000), भक्ति काल (1000-1750), औपनिवेशिक काल (1757-1947) एवं वर्तमान काल। उन्होंने कहा कि कोई भी संप्रेषण अनुवाद तथा अनुवादकीय चेतना के बिना संभव नहीं है।

अपने अध्यक्षीय भाषण में साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि अनुवाद की राष्ट्रीय संगोष्ठी में सबसे पहले मैं अनुवाद के पूर्वजों को स्मरण करना ज़रूरी समझता हूँ। उन्होंने कहा कि आज जब संचार और मीडिया के उत्कृष्ट साधन हमारे सामने मौजूद हैं, ऐसे में ये कल्पना करना भी मुश्किल है कि आज से दो-ढाई हज़ार साल पहले से लोग देशों की सीमाएँ पार कर केवल अनुवाद के लिए इस धरती से उस धरती पर आते-जाते रहे हैं। ये शताब्दी अनुवाद की शताब्दी है। अनुवाद के द्वारा ही आज हम अपने संसार को 'ग्लोबल विलेज' कह पा रहे हैं।

समाहार वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि अनुवाद केवल भाषा का ही अनुवाद नहीं बल्कि एक संस्कृति से दूसरी संस्कृति तक पहुँचना भी है। अतः अनुवाद के चयन में हमें एक विशेष सजगता की ज़रूरत है। भूमंडलीकरण के इस समय में हमें अनुवाद को राजनीतिक एजेंडे से दूर करना होगा, तभी बड़ी-बड़ी भाषाओं के बीच में छोटी भाषाएँ आगे बढ़ पाएँगी।

कार्यक्रम के आरंभ में अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए अनुवाद के क्षेत्र में अकादेमी की विभिन्न योजनाओं के बारे में बताते हुए कहा कि साहित्य अकादेमी देश की एकमात्र ऐसी संस्था है, जो 24 से ज़्यादा भाषाओं में अनुवाद का कार्य कर रही है। इस संगोष्ठी में हुए विचार मंथन से साहित्य अकादेमी एक नए ढंग से अपने अनुवाद कार्यक्रमों को संचालित करेगी। इसके बाद आयोजित तीन सत्र, जो 'भक्ति आंदोलन में अनुवादकीय आदान-प्रदान', 'औपनिवेशिक भारत में अनुवादकीय उद्यम' तथा 'समकालीन अनुवादकीय पहल और प्रभाव' पर केंद्रित थे, में श्री निर्मल कांति भट्टाचार्जी, डॉ. आलोक भल्ला और श्रीमती नमिता गोखले की अध्यक्षता में डॉ. टी. एस. सत्यनाथ, श्री प्रकाश भातंब्रेकर, श्री राजेंद्र प्रसाद मिश्र, श्रीमती मोनालिसा जेना, श्री कल्याण रमण, श्रीमती नीता गुप्ता और डॉ. हरीश नारंग द्वारा आलेख प्रस्तुत किए गए।

कार्यक्रम का संचालन अकादेमी की उपसचिव श्रीमती रेणु मोहन भान ने किया।

आओ कहानी बुनें : बाल गतिविधियाँ

साहित्योत्सव 2016 के अंतर्गत अंतिम दिन 20 फ़रवरी 2016 से 'आओ कहानी बुनें : बाल गतिविधियाँ' का उद्घाटन हिंदी के प्रख्यात बाल-साहित्यकार श्री प्रयाग शुक्ल ने किया। इस अवसर पर उन्होंने अकादेमी द्वारा बच्चों तथा बाल-साहित्य के क्षेत्र में संपादित की जानेवाली गतिविधियों के लिए अकादेमी को बधाई दी। श्री शुक्ल ने बताया कि बच्चों को कम उम्र से ही समुचित दिशा-निर्देश दिया जाना ज़रूरी है। उन्होंने बच्चों को अपनी कविताएँ भी सुनाईं। आरंभ में अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने औपचारिक स्वागत करते हुए बाल-साहित्य के क्षेत्र में अकादेमी की गतिविधियों पर संक्षेप में प्रकाश डाला तथा कहा कि बच्चों में साहित्य पठन के प्रति अभिरुचि जगाना हमारा दायित्व होना चाहिए। इस अवसर पर अकादेमी द्वारा हिंदी में प्रकाशित आलोचना कृति *भारतीय बाल साहित्य* (सं. हरिकृष्ण देवसरे) एवं *पापू बापू बने महात्मा* (ले. मुहम्मद कुन्ही) तथा चीनी बाल-साहित्य कृतियों के अंग्रेज़ी अनुवाद *सेलेक्टेड स्टोरीज़ ऑफ लिआयो ज़ाई ज़ी यी* और *स्टोरीज़ ऑफ हुएनांजी* का लोकार्पण श्री प्रयाग शुक्ल द्वारा किया गया। कार्यक्रमों का संयोजन-संचालन अकादेमी की उपसचिव श्रीमती गीतांजलि चटर्जी द्वारा किया गया।

बाल गतिविधियों के अंतर्गत 22 स्कूलों के 160 बच्चों ने अपनी हिस्सेदारी की। दो आयुवर्गों में कविता लेखन प्रतियोगिता (निर्णायक : श्री दिविक रमेश एवं

बाएँ से दाएँ : श्रीमती गीतांजलि चटर्जी, श्री प्रयाग शुक्ल एवं डॉ. के. श्रीनिवासराव

चित्र प्रतियोगिता के प्रतिभागी

श्रीमती दीपा अग्रवाल), सृजनात्मक लेखन कार्यशाला (श्री राहुल सैनी द्वारा संचालित), पेंटिंग कार्यशाला (श्री एस. वी. रामाराव द्वारा संचालित) तथा कार्टून कार्यशाला (श्री सुधीर नाथ द्वारा संचालित) का आयोजन इस समारोह के विशेष आकर्षण थे। श्रीमती अनूपा लाल और श्रीमती वैलेंटिना त्रिवेदी ने क्रमशः अंग्रेज़ी और हिंदी में बच्चों को कहानियाँ सुनाईं। कविता लेखन प्रतियोगिता के विषय थे – 'स्वच्छ भारत' और 'बढ़ता प्रदूषण'। कनिष्ठ आयु वर्ग (7-12 वर्ष) के विजयी प्रतिभागी हैं – अरुणिमा त्रिपाठी (प्रथम), ए. एम. एन. माधुरी (द्वितीय), खुशी भट्ट (तृतीय) तथा डी. एम. रमिता एवं करन राज (प्रोत्साहन)। वरिष्ठ आयु वर्ग (13-17 वर्ष) के विजयी प्रतिभागी हैं – खुशबू जालु थरिया (प्रथम), गौरी लक्ष्मी (द्वितीय), अफ़साना (तृतीय) तथा आमिर हुसैन एवं रुचि सिंह (प्रोत्साहन)। विजयी प्रतिभागियों को अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए।

इस दौरान बच्चों के लिए दो विशेष सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए – पं दीन दयाल उपाध्याय विकलांग जन संस्थान, दिल्ली के बच्चों द्वारा नृत्य-संगीत की अनेक प्रस्तुतियाँ तथा यंग मिज़ोरम एसोसिएशन, चिंगावेज शाखा, मिज़ोरम द्वारा चेराव (बाँस-नृत्य) की प्रस्तुति।